मरु संदेश
Maru Sandesh

पत्रिका /जे.आर.ओ./2023 छठा अंक

हडको

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

हडको वित्त पोषित CSR योजनाएं

onstruction of Govt. Sec. School Building (Expansion

संरक्षक एवं संपादक

श्री सुधीर कुमार भटनागर

क्षेत्रीय प्रमुख

सह संपादक

डा. अरूण कुमार राणा

हिन्दी नोडल अधिकारी

एवं

श्री आशीष कुमार

हिन्दी नोडल सहायक

विशेष सहयोग

क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिक

उपलब्धियाँ

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स (आई.आई.ए.) भारत में प्रतिवर्ष आई.आई.ए. पी.एल. के नाम से खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है जिसमें देश के सभी राज्यों के खिलाड़ी प्रतिभागिता करते हैं। गत वर्ष इस प्रतियोगिता में कार्यालय के डॉ. अरूण कुमार राणा, संयुक्त महाप्रबंधक–परि. ने बैडमिंटन प्रतियोगिता में ऑंध्रप्रदेश के खिलाड़ियों को फाइनल मैच में हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

पुलह भटनागर पुत्र श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख
Ecole Polytchnique's, Paris से मास्टर ऑफ साइंस कर रहे है, साथ ही इनका EPFL (Swiss Federal Institute of Technology, Lausanne, Switzerland) में Thesis work हेतु चयन / प्रवेश प्राप्त हुआ है।

नताशा ठागरिया, पुत्री श्री नरेश कुमार ठागरिया, DGM(IT) द्वारा MBBS Final Year 65 प्रतिशत अंकों के साथ उत्तीर्ण की। वर्तमान में भरतपुर मेडिकल कॉलेज में Internship कर रही है।

लिप्पी भटनागर, पुत्री श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख
द्वारा MBBS के 3rd Year में कुल 86 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

श्रीमती गरिमा स्वामी, प्रबन्धक (परियोजना) को 07.03.2022 को पुत्र रत्न (आदित्य) की प्राप्ति के साथ जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में हडको परिवार में नए सदस्य का आगमन हुआ। श्री आदित्य के एक वर्ष होने पर इनका जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

सुश्री तनीशा शर्मा पुत्री श्री नन्दकिशोर उप प्रबन्धक–वित ने वर्ष 2021–2022 में एम टेक (वीएलएसआई डिजाईन) में कॉलेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं तद्उपरांत गोल्ड मेडल प्रदान किया गया।

श्री कार्तिक शर्मा पुत्र श्री नन्दकिशोर उप प्रबन्धक–वित को वर्ष 2022–2023 में B.Tech (C.S.) में प्रवेश प्राप्त हुआ।

संदेश

यह अत्यंत हर्ष एवं गौरव का विषय है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का सतत् निर्वाह करते हुए कार्यालय की गृह पत्रिका ''मरू संदेश'' के छठे अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिंदी के उत्तरोत्तर विकास की दिशा में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय का यह प्रयास सराहनीय है।

हिंदी बहुत ही सहज, सरल और उदार भाषा है। यह एक सशक्त और वैज्ञानिक भाषा भी है। नई नकनीक और प्रौद्योगिकी के सहयोग से इसकी क्षमता और सामर्थ्य का और भी अधिक विस्तार हुआ है। इस पत्रिका में सम्मिलित ज्ञानवर्धक, लेख, हडको की कार्यप्रणाली, तकनीकी जानकारी आदि पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय एवं सभी कार्मिकों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

कुलदीप नारायण (आई.ए.एस.)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका मरू संदेश के छठे अंक का प्रकाशन कर रहा है और राजभाषा के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह कर रहा है।

इस अंक में जहाँ एक ओर हडको की कार्य प्रणाली और तकनीकी जानकारी का समावेश है, वहीं दूसरी ओर विभिन्न विधाओं पर विचारात्मक लेख, प्रेरणास्पद कहानियाँ, कविताएँ तथा क्षेत्रीय कार्यालय की विविध गतिविधियाँ भी परिलक्षित की गई है।

मैं इस अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को मरू संदेश पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन क लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार निष्पादित होता रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इस क्रम में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से ई–पत्रिका मरू संदेश का छठा अंक नवीन साज सज्जा के साथ प्रकाशित किया जा रहा है।

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। हिंदी भाषा ने प्रत्येक भारतीय को वैश्विक स्तर पर सम्मान भी दिलवाया है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी के लिए सम्मान एवं गौरव की बात है।

इसी क्रम में जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की ओर ई–पत्रिका मरू संदेश के छठे अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मैं इस अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय परिवार के सभी सदस्यों को इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

डी. गुहन
निदेशक (वित्त)

संदेश

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा द्वारा अपनी ई–पत्रिका मरू संदेश के छठे अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। सरकारी कामकाज में राजभाषा प्रयोग को प्रेरित करने में हिंदी गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन सकारात्मक रूप से उपयोगी सिद्ध होता है, अतः राजभाषा को सुदृढ करने की दिशा में हिंदी पत्रिका मरू संदेश के निरंतर प्रकाशन के लिए हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर बधाई का पात्र है।

मैं क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों को राजभाषा के प्रति स्नेह के लिए बधाई देता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि मरू संदेश का अनवरत प्रकाशन जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित।

अरूण कुमार चतुर्वेदी
प्रमुख सतर्कता अधिकारी

संदेश

मुझे यह जानकार हर्ष हो रहा है कि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय अपनी गृह पत्रिका मरू संदेश का षष्टम अंक ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन को बढावा देने के लिए गृह पत्रिकाएं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से प्रकाशित यह ई–पत्रिका निश्चित रूप से सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रति कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक निष्ठावान एवं संवेदनशील बनाएगी तथा राजभाषा कार्यान्वयन के विकास में उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं इस अवसर पर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों एवं पत्रिका के संपादक मंडल की ओर से किये गए श्रम साध्य प्रयासों की सराहना करता हूँ और इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

डॉ0 आलोक कुमार जोशी
कार्यकारी निदेशक–प्रचालन/राजभाषा

संदेश

हिन्दी भाषा बहुत ही सरल एवं सहज भाषा है। अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का यह एक सशक्त माध्यम है तथा हिन्दी गृह पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में गर्व का विषय है।

इस क्रम में हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर, की हिन्दी ई–पत्रिका गृह पत्रिका ''मरू संदेश'' का ई–पत्रिका के रूप में प्रकाशन, सराहनीय प्रयास है। इस गृह पत्रिका में विविध विषयों को शामिल किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह सभी पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होगी। हडको क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी तथा संपादक मंडल इस एकजुट सहयोग के लिए बधाई के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित।

सुरेन्द्र कुमार

सुरेन्द्र कुमार
महाप्रबंधक (राजभाषा)

संदेश

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की गृह पत्रिका मरू संदेश का छठा अंक ई–पत्रिका के रूप में आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भाषा संस्कृति का कोष और वाहन है। भाषा केवल विचारों के आदान प्रदान का माध्यम ही नहीं अपितु विचारों की जननी के रूप में उनके भावों को स्वरूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश का विकास तभी सम्भव है जब उसके पास अपनी सशक्त भाषा हो। भाषा किसी भी देश की भावनाओं एवं अस्मिता से जुडी होती है। राजभाषा हिंदी को अपने दैनिक कार्यक्रम में शामिल करने से न केवल हम अपने कार्यालयिक दायित्व को पूरा करते है बल्कि अपनी अस्मिता को भी सुरक्षित करते है।

अपने अस्तित्व को सुरक्षित करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि दायित्व भी है, इसलिए हमें अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना चाहिए। यह सरल एवं सुगम भी है। राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने की दिशा में मरू संदेश का निरंतर प्रकाशन एक छोटा सा प्रयास मात्र है। आशा है की यह प्रयास सफल रहेगा। आपकी बहुमूल्य प्रतिकिया एवं सुझाव अवश्य भेजें, जिससे इस पत्रिका को बहुपयोगी बनाया जा सके।

सुधीर कुमार भटनागर
क्षेत्रीय प्रमुख

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक का जयपुर दौरा

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) का जयपुर दौरा

मुख्य सर्तकता अधिकारी का जयपुर दौरा

कार्यकारी निदेशक (आपरेशनस्) का जयपुर दौरा

" अक्षय ऊर्जा और राजस्थान "

अक्षय ऊर्जा आधुनिक जीवन शैली का अविभाज्य अंग बन गयी है। ऊर्जा के बिना आधुनिक सभ्यता के अस्तित्व पर एक बहुत बडा प्रश्न–चिन्ह लग जायेगा। पेट्रोल, डीजल, कोयला, गैस आदि की दिनो दिन घटती मात्रा ने हमें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि हमें अपनी कल की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए ऐसे संसाधनों को खोजना होगा, जो कभी समाप्त न हों और हमारा जीवन सुचारु रूप से बिना किसी ऊर्जा संकट के चलता रहे। ऊर्जा के कभी न समाप्त होने वाले संसाधनों को ही हम अक्षय ऊर्जा के स्त्रोत के रूप में जानते हैं।

- अक्षय ऊर्जा, अक्षय विकास का प्रमुख स्तम्भ है।
- अक्षय उर्जा, ऊर्जा का ऐसा विकल्प है जो असीम (Limitless) है।
- ऊर्जा का पर्यावरण से सीधा सम्बन्ध है। ऊर्जा के परम्परागत साधन (कोयला, गैस, पेट्रोलियम आदि) सीमित मात्रा में होने के साथ–साथ पर्यावरण के लिये बहुत हानिकारक हैं। दूसरी तरफ ऊर्जा के ऐसे विकल्प हैं जो पूरणीय हैं तथा जो पर्यावरण को कोई हानि नहीं पहुंचाते।
- वैश्विक गर्मी (ग्लोबल वार्मिंग) तथा जलवायु परिवर्तन से बचाव

अक्षय ऊर्जा स्त्रोत वर्ष पर्यन्त अबाध रूप से भारी मात्रा में उपलब्ध होने के साथ साथ सुरक्षित, स्वतः स्फूर्त व भरोसेमंद हैं। साथ ही इनका समान वितरण भी संभव है। भारत में अपार मात्रा में जैवीय पदार्थ, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोगैस व लघु पनबिजली उत्पादक स्त्रोत हैं। पूरे विश्व में, कार्बन रहित ऊर्जा स्त्रोतों के विकास व उन पर शोध अब प्रयोगशाला की चाहरदीवारी से बाहर आकर औद्योगिक एवं व्यापारिक वास्तविकता बन चुके हैं।

देश का अपारम्परिक ऊर्जा कार्यक्रम विश्व के इस प्रकार के विशालतम कार्यक्रमों में से एक है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रौद्योगिकी, बायोगैस, समुन्नत चूल्हे, बायोमास गैसीफायर, शीघ्र बढ़ने वाली वृक्ष–प्रजातियां, जैवीय पदार्थ का दहन एवं सह–उत्पादन, पवन–चक्कियों द्वारा जल निकासी, वायु टर्बाइनों द्वारा शक्ति का उत्पादन, सौर तापीय व फोटो वोल्टायिक प्रणालियाँ, नागरीय घरेलू तथा औद्योगिक अवजल व कचरे से ऊर्जा उत्पादन, हाइड्रोजन ऊर्जा, समुद्री ऊर्जा, फुएल सेल, विद्युत चालित वाहन (बसें) व परिवहन के लिए वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों पर कार्य हो रहा है।

आने वाले कुछ हजार वर्षों में ही हमारे परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत समाप्त हो जायेंगे। जिसे बनाने में प्रकृति ने लाखों वर्ष लगाएं है उसे हम कुछ ही मिनटों में समाप्त कर देते हैं। पर्यावरणीय प्रदूषण, सामाजिक एवं आर्थिक दबाव तथा राजनीतिक उठापटक समस्या को और गंभीर बनाते हैं। अतएव नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों का विकास व प्रयोग तथा इस हेतु दृढ़ इच्छा शक्ति का होना आज की आवश्यकता है।

अक्षय ऊर्जा के स्त्रोत न केवल ऊर्जा के संकट मिटाने में सक्षम हैं, पर्यावरण के अनुकूल भी हैं। भारत में अक्षय ऊर्जा के अनेक स्त्रोत उपलब्ध हैं जैसेः– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, भू–तापीय ऊर्जा, बायोमास एवं जैव ईंधन आदि। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

(क) सौर ऊर्जा–भारत में सौर ऊर्जा की काफी सम्भावनाएँ हैं, क्योंकि देश के अधिकतर भागों में वर्ष में 250–300 दिन सूर्य अपनी किरणें बिखेरता है। सूर्य से ऊर्जा प्राप्त करने के लिए फोटोवोल्टेइक सेल प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। फोटोवोल्टेइक सेल सूर्य से प्राप्त होने वाली किरणों को ऊर्जा में परिवर्तित कर देता है। हमारे देश में सौर ऊर्जा के रूप में प्रतिवर्ष लगभग 5 हजार खरब यूनिट बिजली बनाने की सम्भावना मौजूद है, जिसके लिए पर्याप्त तीव्रगति से कार्य किए जाने की आवश्यकता है। भारत में विगत 25–30 वर्षों से सौर ऊर्जा पर कार्य हो रहा है।

सौर ऊर्जा अभी महँगी है, इसलिए इसकी उपयोगिता का ज्ञान होते हुए भी लोग इसका प्रयोग करने से बचते हैं। अब सोलर कूकर, सोलर बैटरी चालित वाहन और मोबाइल फोन भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। लोग धीरे–धीरे इसकी महत्ता समझ रहे हैं। कर्नाटक के लगभग एक हजार गाँवों में सौर ऊर्जा के प्रयोग का अभियान चल रहा है। आने वाले समय में सौर ऊर्जा निश्चित ही भारत को प्रगति के मार्ग पर ले जाने में सहायक होगी।

(ख) पवन ऊर्जा–पवन या वायु ऊर्जा अक्षय ऊर्जा का दूसरा महत्वपूर्ण स्त्रोत है। भारत में तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान आदि प्रदेशों में पवन ऊर्जा के विद्युत उत्पादन का कार्य चल रहा है। भारत में पवन ऊर्जा की काफी सम्भावनाएँ हैं। इस समय भारत में पवन ऊर्जा का नवीन और ऊर्जा मन्त्रालय के अनुसार भारत में वायु द्वारा 48,500 मेगावॉट विद्युत उत्पादन की क्षमता है, अभी तक 12,800 मेगावॉट की क्षमता ही प्राप्त की जा सकी है।

पिछले दो दशकों में विद्युत उत्पादक पवनचक्कियों (टरबाइनों) की रूपरेखा, स्थल का चयन, स्थापना, कार्यकलाप और रख–रखाव में तकनीकी रूप से भारी प्रगति हुई है और विद्युत उत्पादन की लागत कम हुई है। पवन ऊर्जा द्वारा पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि इसमें अपशिष्ट का उत्पादन नहीं के बराबर होता है विकिरण की समस्या भी नहीं होती है। आने वाले समय में पवन ऊर्जा के सशक्त माध्यम बनने की पूरी सम्भावनाएँ हैं।

(ग) जल ऊर्जा–जल अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्त्रोतों में से एक है। इसमें नदियों पर बाँध बनाकर उनके जल से टरबाइनों द्वारा विद्युत उत्पादन किया जाता है। भारत में बाँध बनाकर जल विद्युत का उत्पादन दीर्घकाल से हो रहा है। इसके अलावा समुद्र में उत्पन्न होने वाले ज्वार–भाटा की लहरों से भी विद्युत उत्पादन किया जा सकता है। भारत की सीमाएँ तीन–तीन ओर से समुद्रों से घिरी हैं, अतः अक्षय ऊर्जा स्त्रोत का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जा सकता है।

(घ) भू–तापीय ऊर्जा–यह पृथ्वी से प्राप्त होने वाली ऊर्जा है। भू–तापीय ऊर्जा का जन्म पृथ्वी की गहराई में गर्म, पिघली चट्टानों से होता है। इस स्त्रोत से ऐसे स्थानों पर ऊर्जा प्राप्त करने के लिए पृथ्वी के गर्म क्षेत्र तक एक सुरंग खोदी जाती है, जिनके द्वारा पानी को वहाँ पहुँचाकर उसकी भाप बनाकर टरबाइन चलाकर बिजली बनाई जाती है।

भारत में लगभग 113 संकेत मिले हैं, जिनसे लगभग 10 हजार मेगावॉट बिजली उत्पादन होने की सम्भावना है। भू–तापीय ऊर्जा से विद्युत उत्पादन लागत जल ऊर्जा से उत्पन्न विद्युत जितनी ही है। भारत को भू–तापीय ऊर्जा को प्रयोग में लाने के लिए बड़ी मात्रा में आवश्यक संसाधन जुटाने पड़ेंगे, तभी इस ऊर्जा का लाभ उठाया जा सकेगा।

(ङ) बायोमास एवं जैव ईंधन–कृषि एवं वानिकी अवशेषों (बायोमास/ जैव पदार्थों) का प्रयोग भी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है। भारत की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या जैव पदार्थों का प्रयोग खाना बनाने के लिए ईंधन के रूप में करती है। लकड़ी, गोबर और खरपतवार प्रमुख जैव–पदार्थ हैं, जिनसे बायोगैस उत्पन्न की जाती है। गन्ने, महुए, आलू, चावल, जौ, मकई और चुकन्दर जैसे शर्करायुक्त पदार्थों से एथेनॉल बनाया जाता है। इसे पेट्रोल में मिलाकर ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। भारत सरकार इसका 10 प्रतिशत तक पेट्रोल में मिश्रण करना चाहती है, जिसके लिए प्रतिवर्ष 266 करोड़ लीटर एथेनॉल की जरूरत होगी, किन्तु एथेनॉल बनाने वाली

चीनी मिलों ने अभी 140 करोड़ लीटर एथेनॉल की आपूर्ति की पेशकश ही सरकार से की है।

इसके अतिरिक्त कृषि से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थों जैसे खाली भुट्टे, फसलों के डंठल, भूसी आदि और शहरों एवं उद्योगों के ठोस कचरे से भी बिजली बनाई जा सकती है। भारत वर्ष में उनसे लगभग 23,700 मेगावॉट बिजली प्रतिवर्ष बन सकती है, परन्तु अभी इनसे 2,500 मेगावॉट बिजली का ही उत्पादन हो रहा है।

(च) परमाणु ऊर्जा–भारत के डॉ. होमी भाभा को भारत में परमाणु ऊर्जा के विकास का जनक माना जाता है। भारत में पाँच परमाणु ऊर्जा केन्द्रों पर 10 परमाणु रिएक्टर हैं, जो देश की कुल दो प्रतिशत बिजली का उत्पादन करते हैं। यद्यपि परमाणु ऊर्जा पर्यावरण के लिए घातक नहीं है, लेकिन इससे सम्बन्धित कोई भी दुर्घटना अवश्य ही मानव–जीवन के लिए घातक सिद्ध होती है। इसका सबसे अधिक खतरा उत्पादन के पश्चात् निकलने वाला रेडियोधर्मी अपशिष्ट कचरा है, जिसे समाप्त करना दुष्कर होता जा रहा है, अतः यह अक्षय ऊर्जा का स्त्रोत होते हुए भी इसका प्रयोग दीर्घकाल तक नहीं किया जा सकता है। अक्षय ऊर्जा और हमारा राष्ट्र–अक्षय ऊर्जा वैश्विक जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए श्रेष्ठ साधन है, क्योंकि इससे हमारा पर्यावरण स्वच्छता के साथ बड़ी मात्रा में ऊर्जा भी प्राप्त होती है।

इसी कारण विभिन्न देशों में अपने–अपने अक्षय ऊर्जा स्त्रोत बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा दिखाई देने लगी है। वैश्विक रुझानों को देखते हुए भारत अक्षय ऊर्जा की प्रतिस्पर्धा का सक्रिय भागीदार है। वह निरन्तर अक्षय ऊर्जा स्रोतों की अपनी श्रेणियाँ विस्तृत करने के प्रयास में जुटा है। वर्तमान में भारत की संस्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता लगभग 30 गीगावॉट है और भारत इस क्षेत्र में अग्रणी है। भारत की अक्षय ऊर्जा विकास योजना में घरेलू ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करना भी शामिल है। इस योजना से जहाँ क्षेत्रीय विकास होगा, वहीं रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होंगे। पर्यावरण सुरक्षा भी इसके माध्यम से हो सकेगा और ग्लोबल वार्मिंग के अन्तर्गत अधिक कार्बन डाइ–ऑक्साइड उत्सर्जन के अन्तरराष्ट्रीय दबाव से भी हम मुक्त हो सकेंगे।

राजस्थान में अक्षय ऊर्जा

प्रदेश में समृद्ध बनाने के लिए उर्जा के लगातार नए विकल्प खोजे जा रहे हैं। इसी

दिशा में सरकार की ओर से नया कदम उठाया गया है। राजस्थान में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में ग्रीनको एनर्जी द्वारा 30,000 करोड़ रुपये की लागत वाली हाइब्रिड एनर्जी परियोजना में निवेश करेगी। भारत के पहले प्रोजेक्ट में 3600 मेगावाट सोलर, 900 मेगावाट विंड और 2520 मेगावाट पंप हाइड्रो स्टोरेज प्लांट की स्थापना होगी। इसके तहत राज्य के बारां जिले के शाहपुर में हाइड्रो स्टोरेज प्लांट, पाली में सोलर और जैसलमेर में विंड प्रोजेक्ट स्थापित किया जाएगा। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व वाली राज्य सरकार पहली बार एक हाइब्रिड परियोजना स्थापित करने के लिए आगे बढ़ रही है। इसमें ऊर्जा उत्पादन के लिए सौर, पवन ऊर्जा और पंप किए गए जल भंडारण का उपयोग किया जाएगा।

अक्षय ऊर्जा निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. सुबोध अग्रवाल कहते हैं, ''बारां जिले में हाइड्रो स्टोरेज प्लांट को स्थापित किया जाएगा। यह प्रोजेक्ट निर्बाध बिजली आपूर्ति के लिए सौर, पवन और जल विद्युत के संयोजन के साथ देश में अपनी तरह की पहली स्टोरेज परियोजना होगी।'' उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के नेतृत्व में बारां जिले के शाहपुर में जल स्टोरेज परियोजना को 11,882 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से विकसित होगा। स्टोरेज सुविधा 2520 मेगावाट की एक स्टैंडअलोन पंप स्टोरेज परियोजना होगी। विभाग की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार हाइब्रिड एनर्जी परियोजना के तहत लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इसके तहत राजस्थान सरकार ने 2024–25 तक 30,000 मेगावाट सौर ऊर्जा परियोजनाओं का लक्ष्य रखा है, ताकि ऊर्जा क्षेत्र में राजस्थान एक मॉडल राज्य के रूप में स्थापित हो।

अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा जो योजनाएँ चलाई जा रही हैं, उनसे यह आशा बंधती है कि हम निकट भविष्य में अपनी ऊर्जा–प्राप्ति और पर्यावरण–सुरक्षा की समस्या का समाधान खोजने में अवश्य ही सफल होंगे। हम इस क्षेत्र में अन्य विकासशील देशों को सहयोग करके न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित कर सकेंगे, बल्कि विश्व–समुदाय के मध्य स्वयं को एक मजबूत राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में भी सफल होंगे।

डा. अरूण कुमार राणा
संयुक्त महाप्रबन्धक (परियोजना)

Book Launch of “Three Innings” written by Sh. K.K. Bhatnagar, IAS (Retd.), Ex-CMD, HUDCO on 14.11.2022

" कचरे से समृद्धि की ओर "

बढ़ती आय, तेजी से बढ़ता हुआ लेकिन अनियोजित शहरीकरण और बदलती जीवन शैली के परिणामस्वरूप भारत में अपशिष्ट/कचरे की मात्रा में वृद्धि हुई है और उनकी संरचना (कागज, प्लास्टिक और अन्य अकार्बनिक सामग्री के बढ़ते उपयोग के साथ) में बदलाव आया है। भारत में

अनुपयुक्त अपशिष्ट प्रबंधन के पर्यावरण और स्वास्थ्य पर कई प्रभाव पड़ते हैं। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की वर्तमान स्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट को दूर करने पर ध्यान देने के साथ ही भारतीय शहरों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की भविष्य की चुनौतियों का समाधान करने हेतु एक दीर्घकालिक रणनीति तैयार करने की आवश्यकता है।

भारत में अपशिष्ट प्रबंधन की वर्तमान स्थिति

- नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (प्रबंधन और प्रहस्तन) नियम, 2000 (Municipal Solid Waste Management Handling Rules, 2000) में यह संकेत दिया गया कि भारत में ठोस अपशिष्ट के संग्रहण, परिवहन, निपटान और पृथक्करण का उत्तरदायित्व शहरी स्थानीय निकायों (Urban Local Bodies- ULBs) पर है।
- प्रत्येक वर्ष भारत 62 मिलियन टन अपशिष्ट उत्पन्न करता है। इनमें से लगभग 43 मिलियन टन (70%) को एकत्र किया जाता है, जिसमें से लगभग 12 मिलियन टन को उपचारित किया जाता है और 31 मिलियन टन को लैंडफिल स्थलों पर डंप किया जाता है।
- बदलते उपभोग पैटर्न और तीव्र आर्थिक विकास के साथ अनुमान है कि शहरी नगरपालिका ठोस अपशिष्ट उत्पादन वर्ष 2030 तक बढ़कर 165 मिलियन टन हो जाएगा।
- भारत के अधिकांश डंप या अपशिष्ट निपटान स्थल अपनी क्षमता तथा 20

मीटर की उच्च सीमा के पार जा चुके हैं। अनुमान है कि ये डंप स्थल 10,000 हेक्टेयर से अधिक शहरी भूमि पर फैले हुए हैं।

अपशिष्ट के प्रमुख वर्गीकरण

- ठोस अपशिष्टः सब्जियों का कचरा, रसोई का कचरा, घरेलू कचरा आदि।
- ई–वेस्ट (E-Waste): परित्यक्त कम्प्यूटर, टीवी, म्यूजिक सिस्टम जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से उत्पन्न अपशिष्ट।
- तरल अपशिष्टः विभिन्न उद्योगों, चर्मशोधन कारखानों, भट्टियों, ताप विद्युत संयंत्रों आदि में प्रयोग किया गया जल।
- प्लास्टिक अपशिष्टः प्लास्टिक बैग, बोतलें, बाल्टी आदि।
- धातु अपशिष्टः अप्रयुक्त धातु शीट, धातु स्क्रैप आदि।
- परमाणु अपशिष्टः परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से उत्पन्न अनुपयुक्त सामग्री।

इन सभी प्रकार के अपशिष्टों को गीले कचरे (Wet Waste) या जैव–निम्नीकरणीय (Biodegradable) और सूखे कचरे (Dry Waste) या गैर– जैव–निम्नीकरणीय (Non Biodegradable) के दो समूहों में बाँटा जा सकता है।

भारत में अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

- **अपशिष्ट प्रबंधन में शहरी स्थानीय निकायों की अक्षमताः** भारत के अधिकांश नगर निकाय क्षेत्रों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन अभ्यास भारी अक्षमता से ग्रस्त हैं; इसके साथ ही वे निर्णय, निर्माण और लागत योजना की समस्या जैसी अन्य प्रशासनिक बाधाओं से ग्रस्त हैं।

- राज्य सरकार के अधीन कार्यरत नगर निकाय संस्थाओं में प्रायः कर्मचारियों की कमी है, जबकि इसके वित्तीय बजट का अधिकांश भाग अपशिष्ट डंपिंग अभ्यासों में व्यय हो जाता है। इसके अलावा, कई नगर निकाय मुनाफा कमाने के उदेश्य से कूड़ा संग्रह एवं निपटान के लिये निजी ठेकेदारों को काम पर रखते हैं।
- **अपशिष्ट पृथक्करण का अभावः** घरेलू कचरे के पृथक्करण के बारे में आबादी के एक बड़े हिस्से में जागरूकता का अभाव है। व्यवसाय संबंधी अपशिष्ट (Trade Waste) को उपयुक्त रूप से पृथक करने की विफलता के कारण ये लैंडफिल में मिश्रित हो जाते हैं।

- फूड स्क्रैप, कागज, प्लास्टिक जैसे अपशिष्ट पदार्थ और तरल अपशिष्ट मिश्रित और अपघटित होते हुए मृदा में दूषित जल का रिसाव करते हैं और वातावरण में हानिकारक गैस छोड़ते हैं।

'अनसस्टेनेबल पैकेजिंग': ऑनलाइन रिटेल और फूड डिलीवरी ऐप की लोकप्रियता (हालाँकि ये अभी बड़े शहरों तक सीमित हैं) प्लास्टिक कचरे की वृद्धि में योगदान दे रही है।

- प्लास्टिक पैकेजिंग के अत्यधिक इस्तेमाल को लेकर ई–कॉमर्स कंपनियों की भी आलोचना की जा रही है।
- इसके अलावा, पैक किये गए उत्पादों के साथ कोई निपटान निर्देश शामिल नहीं होता है।

डेटा संग्रह तंत्र का अभाव: भारत में ठोस या तरल कचरे के संबंध में टाइम सीरीज डेटा या पैनल डेटा का अभाव है इसलिये देश के अपशिष्ट योजनाकारों के लिये अपशिष्ट प्रबंधन की अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करना अत्यंत कठिन है।

- इस परिदृश्य में निजी संस्थाओं के लिये अपशिष्ट प्रबंधन नीतियों की लागत और लाभों के बीच के संबंध को समझना और बाज़ार में प्रवेश करना कठिन हो जाता है।

बढ़ते ग्रामीण–शहरी संघर्ष: भारत के अधिकांश शहरों में इसके बाहरी इलाकों में गाँवों के पास अपशिष्ट फेंका जाता है जो गाँवों के पर्यावरण को प्रभावित करता है और कई स्वास्थ्य संबंधी खतरे उत्पन्न करता है। इससे ग्रामीण–शहरी संघर्ष उत्पन्न हो रहे हैं।

अपशिष्ट प्रबंधन के संबंध में सरकार की हाल की पहलें – एकल उपयोग प्लास्टिक और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के उन्मूलन पर राष्ट्रीय डैशबोर्ड, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधन नियम, 2022, प्रकृति शुभंकर, प्रोजेक्ट 'रिप्लान' (REPLAN) आदि।

आगे की राह

- विस्तारित उत्पादनकर्त्ता उत्तरदायित्व (Extended Producer Responsibility): भारत में विस्तारित उत्पादनकर्त्ता उत्तरदायित्व का एक तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है ताकि सुनिश्चित हो सके कि उत्पाद निर्माताओं को उनके उत्पादों के जीवन चक्र के विभिन्न भागों के लिये वित्तीय रूप से उत्तरदायी बनाया जाए।
- इसमें उत्पादों के उपयोगी जीवन चक्र के अंत में उन्हें वापस लेना, उनका पुनर्चक्रण एवं अंतिम निपटान शामिल है और एक प्रकार से चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना है।
- **विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन:** सामुदायिक स्तर पर पुनर्चक्रण योग्य वस्तुओं के संग्रह के लिये, अधिमानतः अनौपचारिक क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से, शहरी स्तर पर एक नई नवीन प्रणाली शुरू की जा सकती है।
- विकेंद्रीकृत अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली या सामुदायिक स्तर की अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली एक केंद्रीकृत स्थान पर बड़ी मात्रा में नगरपालिका कचरे को संभालने के बोझ को कम करेगी, साथ ही परिवहन और मध्यवर्ती भंडारण की लागत में कमी लाएगी।
- यह शहर के स्तर पर अनौपचारिक श्रमिकों और छोटे उद्यमियों के लिये रोज़गार के अवसर भी प्रदान करेगी।

- उदाहरण के लिये, भोपाल (मध्य प्रदेश) में शहरी स्थानीय निकाय एक स्थानीय संगठन के साथ साझेदारी में वर्ष 2008 से ही प्लास्टिक अपशिष्ट संग्रहण और पुनर्चक्रणकर्ता को उनकी बिक्री को सुव्यवस्थित करने के लिये अपशिष्ट संग्रहकर्ताओं के साथ काम कर रहे हैं।

कूड़ा और कूड़ा बीनने वालों के प्रति व्यवहार परिवर्तन: कूड़े या अपशिष्ट को प्रायः गंदे और अनुपयोगी वस्तु की तरह देखा जाता है और कूड़ा संग्रहकर्ताओं को प्रायः अलगाव का सामना करना पड़ता है। इस धारणा को बदलने और उचित अपशिष्ट प्रबंधन पर विचार करने की आवश्यकता है।

- इसके साथ ही, शहरी स्थानीय निकायों को कूड़ा बीनने वालों को वित्तीय प्रोत्साहन देकर और लोगों में उनके सामाजिक समावेश के बारे में जागरूकता का प्रसार कर सहयोग देना चाहिये।
- कूड़ा बीनने वालों का सामाजिक समावेश न केवल उनके स्वयं के स्वास्थ्य और आजीविका के लिये, बल्कि नगर पालिकाओं की अर्थव्यवस्था के लिये भी महत्त्वपूर्ण है।

शहरी खाद केंद्र: जैविक कचरे के पुनः उपयोग के लिये शहरों में खाद केंद्र (Composting Centers) स्थापित किये जा सकते हैं, जिससे मृदा में कार्बन की मात्रा बढ़ेगी और रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी।

- कम्पोस्ट कार्बन को वापस मृदा में जमा कर कार्बन डाइऑक्साइड सिक्वेशट्रेशन (Carbon Dioxide Sequestration) में भी मदद करेगा।

प्रौद्योगिकी–संचालित पुनर्चक्रण: सरकार को विश्वविद्यालय और स्कूल स्तर पर अपशिष्ट पुनर्चक्रण के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करना चाहिये ताकि अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में प्रौद्योगिकीय संवृद्धि में आम लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा मिल सके।

- मदुरै स्थित त्यागराज कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को अपशिष्ट प्लास्टिक से टाइल और ब्लॉक निर्माण का पेटेंट प्राप्त हुआ है।
- ये टाइलें अत्यधिक भार को सह सकती हैं और इनका उपयोग निर्माण सामग्री के रूप में किया जा सकता है।

गरिमा स्वामी
प्रबन्धक (परियोजना)

" फिर इस दिल को "

फिर इस दिल को आवाज कोई देता है
फिर ये दिल कोई उम्मीद ढूँढ लेता है
हार मान लेना इस दिल की फितरत नहीं
जिंदगी जीने का कोई बहाना ढूँढ लेता है
क्या करें उसका जिसकी फितरत बेरूखी हो

कौन अपनों में पराया है ढूँढ लेता है
कोई अपना नही है तो क्या जीना छोड दें
अजनबियों में भी कोई अपना ढूँढ लेता है
सॉसें खरीदी जा सकती तो खरीद लेता
तुम में ही साँसों का बहाना ढूँढ लेता है

खुशियाँ नहीं सही फिर भी आरजू जिंदा है
फिर खुश रहने की कोई वजह ढूँढ लेता है
टूटता है जुडता है और फिर टूट जाता है
बार–बार जुडने की कोई वजह ढूँढ लेता है

राजकुमार लावडिया
वरि. प्रबन्धक (प्रशा.)

संस्थाओं के अधिकारियों के साथ ऋण समझौता

डा. सी. पी. जोशी, माननीय अध्यक्ष राजस्थान विधान सभा को
नाथद्वारा योजना का स्वीकृति पत्र प्रदान करते हुए

श्री हृदेश कुमार शर्मा, कार्यकारी निदेशक, RUDSICO
एवं Director cum Jt. Secretary, LSG

श्री मनीष राठी, अध्यक्ष एवं
श्री कौशल कुमार खटूमरा, आयुक्त
नगर पालिका नाथद्वारा

" भारत में क्रिप्टो आस्तियों का भविष्य संदर्भ "

भारत में और विश्व भर में खरीद, बिक्री और ट्रेडिंग जैसी वित्तीय गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के एक माध्यम के रूप में निवेशकों के बीच क्रिप्टोकरेंसी (Crypto currency) की मात्रा और लोकप्रियता में वृद्धि हुई है। संयुक्त राष्ट्र व्यापार और

विकास अभिसमय रिपोर्ट 2021 के अनुसार, वर्ष 2021 में 7.3% भारतीय क्रिप्टोकरेंसी का स्वामित्व रखते थे। यह सराहनीय है कि भारत जीवन के लगभग हर पहलू में ही तेजी से डिजिटलीकरण की ओर आगे बढ रहा है लेकिन इसके साथ ही एक अंतर्निहित चिंता भी है जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। चिंता यह है कि वर्तमान में भारत के पास क्रिप्टो परिसम्पत्ति बाजार को नियंत्रित करने के लिये कोई भी नियामक ढाँचा मौजूद नहीं है। एक नियामक ढँाचे की अनुपस्थिति न केवल इस क्षेत्र में प्रवेश करने के इच्छुक व्यवसायों के लिए अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न करती है, बल्कि निवेशकों के लिये परिहार्य धोखाधडी का जोखिम भी पैदा करती है। एक अविनियमित पारितंत्र मनी लॉन्ड्रिंग, धोखाधडी और आंतक वित्तपोषण को भी अवसर प्रदान कर सकती है।

क्रिप्टोकरेंसी क्या हैं?

क्रिप्टोकरेंसी रूपया या अमेरिकी डॉलर की ही तरह विनिमय का एक माध्यम है, लेकिन यह प्रारूप में डिजिटल है जो मौद्रिक इकाइयों के सृजन को नियंत्रित करने और धन के विनिमय को सत्यापित करने के लिये एन्क्रिप्शन तकनीकों (Encryption techniques) का उपयोग करती है। बिटकॉइन (Bitcoin) विश्व की सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी है जो बाजार पूंजीकरण के अनुसार विश्व की सबसे बडी क्रिप्टोकरेंसी भी है। अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी को राष्ट्रीय सरकारों द्वारा विनियमित नहीं किया जाता है, उन्हें वैकल्पिक मुद्रा या वित्तीय विनिमय के साधन के रूप में देखा जाता है जो राज्य की मौद्रिक नीति के दायरे से बाहर होते है। सितंबर 2021 में अल साल्वाडोर विश्व का ऐसा पहला देश बन गया जिसने बिटकॉइन को वैध मुद्रा/लीगल टेंडर के रूप में मान्यता प्रदान की।

क्रिप्टोकरेंसी के विनियमन के मामले में भारत की स्थिति

वर्ष 2017 में भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने एक चेतावनी जारी कर आगाह किया है कि वर्चुअल करेंसी या क्रिप्टोकरेंसी भारत में वैध मुद्रा नहीं हैं। हालाँकि इन आभासी मुद्राओं पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया। वर्ष 2019 में RBI ने क्रिप्टोकरेंसी के ट्रेडिंग, माइनिंग, होल्डिंग या हस्तांतरण/उपयोग को भारत में वित्तीय जुर्माने या/और 10 वर्ष तक के लिए कारावास के दंड के अधीन घोषित किया। RBI ने यह घोषणा भी की कि वह भविष्य में भारत में डिजिटल रूपए को वैध मुद्रा के रूप में लॉन्च कर सकता है। वर्ष 2020 में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने RBI द्वारा क्रिप्टोकरेंसी पर अधिरोपित प्रतिबंध को निरस्त कर दिया। वर्ष 2022 में भारत सरकार ने केंद्रीय बजट 2022 - 23 में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया कि किसी भी

आभासी मुद्रा/ क्रिप्टोकरेंसी परिसंपत्ति का हस्तांतरण 30% कर कटौती के अधीन होगा। आभासी परिसंपत्ति/ क्रिप्टोकरेंसी के रूप में प्राप्त उपहारों के मामलें में प्राप्तकर्ता पर कर लगाया जाएगा। जुलाई 2022 में भारतीय रिजर्व बैंक ने देश के मौद्रिक और राजकोषीय स्वास्थ्य पर क्रिप्टोकरेंसी के 'अस्थिरताकारी प्रभावों' का हवाला देते हुए इस पर प्रतिबंध लगाने की अनुशंसा की।

क्रिप्टोकरेंसी से संबद्व संदिग्ध क्षेत्र

अस्थिर प्रकृति: क्रिप्टोकरेंसी एक तरह का सट्टा है। इसमें अधिक मात्रा में निवेश बाजार में अस्थिरता (Market Volatility) उत्पन्न करता है, यानी कीमतों में उतार–चढाव को अवसर देता है जिसके परिणामस्वरूप लोगों को भारी नुकसान हो सकता है।

विश्वसनीयता और सुरक्षा: चूँकि क्रिप्टोकरेंसी लेन–देन का एक डिजिटल मोड है, यह हैकर्स, आतंकी वित्तपोषण और ड्रग लेनदेन के लिए एक अत्यंत आम मंच बन गया है। उदाहरण के लिये, अपराधियों द्वारा बिटकॉइन में फिरौती का भुगतान करने के लिये 'वन्नाक्राई' वायरस का उपयोग किया गया था।

विनियन ढाँचें का अभाव: भारत सरकार क्रिप्टोकरेंसी के प्रति 'वेट एंड वाच' नीति का पालन कर रही है। नियामक प्राधिकरण की अनुपस्थिति से निवेशकों की सुरक्षा और अर्थव्यवस्था में धन की आवाजाही के लिये धोखाधडी की संभावना बढ गई है।

'फ्लडिंग एडवरटाइजमेंट': क्रिप्टो बाजार में विज्ञापनों की बाढ आई हुई है ताकि लोगों को सट्टा लगाने के लिये लुभाया जा सके, क्योंकि इसे पैसा कमाने का एक द्रुत तरीका माना जाता है। हालाँकि, इस बात की चिंता है कि 'अत्यधिक वादे' और 'अपारदर्शी विज्ञापन' के माध्यम से युवाओं को गुमराह करने के लिये ये प्रयास किये जा रहे हैं।

मापनीयता/स्केलेबिलिटी संबंधी चिंता: क्रिप्टो की स्केलेबिलिटी एक प्रमुख चिंता बनी हुई है, क्योंकि यह ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी पर आधारित है। ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी में डेटा स्टोरेज तंत्र एपेंड–ऑनली (append-only) होता है, जिसका अर्थ है कि इसे संशोधित नहीं किया जा सकता है और चूंकि मांग बढ रही है, भंडारण क्षमता सीमित बनी रही है।

मनी लॉन्ड्रिंग: इस बात की प्रबल संभावना है कि लोग मनी लॉन्ड्रिंग में निवेश करना शुरू कर दें और यह बहुत आसान है क्योंकि कोई भी बिना किसी जवाबदेही के एक देश से दूसरे देश में धन भेज सकता है।

आर्थिक असंतुलन की संभावना: क्रिप्टोकरेंसी का बढता बाजार भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा के चक्रीय प्रवाह को असंतुलित कर सकता है। अर्थव्यवस्था में वास्तविक नकदी (cash) के सृजन के तरीके से क्रिप्टोकरेंसी के सृजन का तरीका बेहद अलग है। उदाहरण के लिये, भारत में केवल RBI के पास ही नकदी सृजन का अधिकार है जिसे वह न्यूनतम रिजर्वसिस्टम बनाए रखते हुए करता है। यह मांग और आपूर्ति का एक संतुलन बनाए रखता है। लेकिन क्रिप्टोकरेंसी वित्तीय संस्थागत नियमों पर निर्भर नहीं होती बल्कि एन्क्रिप्टेड और प्रोटेक्टेड होती है जिससे पूर्वनिर्धारित एल्गोरिथम रेट पर धन की आपूर्ति में वृद्धि करना कठिन हो जाता हैं।

लोकपाल की अनुपस्थिति: वर्तमान में ऐसा कोई मंच मौजूद नहीं है, जहाँ कोई उपयोगकर्ता क्रिप्टो परिसंपत्तियों से संबंधित किसी भी मदद या शिकायत निवारण के लिये पहुँच सकता है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोक्ता लेन–देन और सूचनात्मक जोखिमों का सामना करते हैं।

निवारक उपाय:

क्रिप्टोकरेंसी को परिभाषित करना: क्रिप्टोकरेंसी को संबंधित राष्ट्रीय कानूनों के तहत प्रतिभूतियों या अन्य वित्तीय साधनों के रूप में स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिये।

स्टार्टअप पारितंत्र को क्रिप्टो से जोडना: भारत के स्टार्टअप पारितंत्र को क्रिप्टोकरेंसी और ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी द्वारा नई उर्जा प्रदन की जा सकती है, जहाँ ब्लॉकचेन डेवलपर्स, डिजाइनर, प्रोजेक्ट मैनेजर, बिजनेस एनालिस्ट, प्रमोटर्स और मार्केटर्स जैसे कई रोजगार धुरी अवसर सृजित हो सकते है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की धुरी : चूँकि क्रिप्टो परिसंपत्ति राष्ट्रीय सीमाओं को पार करती है, वे वित्तीय बाजार शासन के अंतर्राष्ट्रीय समन्वयन के लिये एक धुरी के रूप में कार्य कर सकती है। हालाँकि भारत जैसी कई उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (emerging and developing economies-EMDEs) में क्रिप्टो परिसंपत्ति का विनियमन अभी नवजात अवस्था में ही है। क्रिप्टोकरेंसी प्रवाह को विनियमित करने के लिये एक जोखिम–आधारित और संदर्भ–विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

CBDC की ओर भारत : भारत के वित्त मंत्री ने डिजिटल रूपया (Digital Rupee) के रूप में भारत के लिए एक सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC) शुरू करने की घोषणा की है। यह भारतीय डिजिटल अर्थव्यवस्था को एक बडा प्रोत्साहन देगा। डिजिटल मुद्रा एक अधिक कुशल और सस्ती मुद्रा प्रबंधन प्रणाली को भी बढावा देगी। हालाँकि CBDC को ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का पूरा लाभ उठाने के लिये अन्य क्रिप्टोकरेंसी के साथ तालमेल बिठाए रखने की भी आवश्यकता होगी।

रेनू चौधरी
प्रबन्धक (वित्त)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

" 5जी क्या है? "

5G 5वीं पीढ़ी का मोबाइल नेटवर्क है। यह 1G, 2G, 3G और 4G नेटवर्क के बाद एक नया वैश्विक वायरलेस नेटवर्क है। 5G एक नए प्रकार के नेटवर्क को सक्षम बनाता है जिसे मशीनों, वस्तुओं और उपकरणों सहित लगभग सभी को और सब कुछ एक साथ जोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

एक विस्तारित क्षमता के साथ डिजाइन किया गया है।

उच्च गति, बेहतर विश्वसनीयता और नगण्य विलंबता के साथ, 5G मोबाइल तंत्र को नए क्षेत्रों में विस्तारित करेगा। 5G सुरक्षित परिवहन, दूरस्थ स्वास्थ्य सेवा, सटीक कृषि, तथा हर उद्योग को प्रभावित करेगा।

5G वायरलेस तकनीक उच्च मल्टी–जीबीपीएस पीक डेटा स्पीड, अल्ट्रा लो लेटेंसी, अधिक विश्वसनीयता, विशाल नेटवर्क क्षमता, और अधिक उपयोगकर्ताओं को अधिक समान उपयोगकर्ता अनुभव प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

5G एक एकीकृत, अधिक सक्षम एयर इंटरफेस है। इसे अगली पीढ़ी के उपयोगकर्ता के लिए, नए मॉडल को सशक्त बनाने और नई सेवाएं देने के लिए

5G का आविष्कार किसने किया?

कोई एक कंपनी या व्यक्ति 5G का मालिक नहीं है, लेकिन इस मोबाइल तंत्र के भीतर कई कंपनियां हैं जो 5G को लाने में योगदान दे रही हैं। क्वालकॉम ने कई मूलभूत तकनीकों का आविष्कार करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई है जो उद्योग को आगे बढ़ाती हैं और 5G, को अगला वायरलेस मानक बनाती हैं।

5G कैसे 4G से बेहतर है?

5G 4G से काफी तेज है, 5G की क्षमता 4G से अधिक है, 5G में 4G की तुलना में काफी कम विलंबता है तथा 5G, 4G से बेहतर स्पेक्ट्रम का उपयोग करता है।

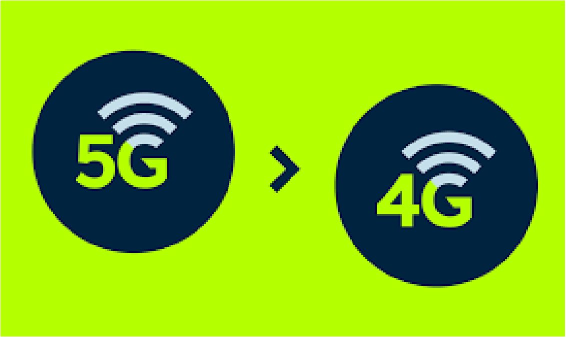

जहां 4G एलटीई ने 3G की तुलना में अधिक तेज मोबाइल ब्रॉडबैंड सेवाएं देने पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं 5G को एक एकीकृत, अधिक सक्षम प्लेटफॉर्म के रूप में डिजाइन किया गया है जो न केवल मोबाइल ब्रॉडबैंड अनुभवों को बढ़ाता है, बल्कि मिशन–महत्वपूर्ण संचार और विशाल आईओटी जैसी नई सेवाओं का भी समर्थन करता है। 5G मूल रूप से सभी प्रकार के स्पेक्ट्रम (लाइसेंस प्राप्त, साझा, बिना लाइसेंस) और बैंड (निम्न, मध्य, उच्च), परिनियोजन मॉडल की एक विस्तृत श्रृंखला (पारंपरिक मैक्रो–सेल से हॉटस्पॉट तक), और इंटरकनेक्ट करने के नए तरीके (जैसे डिवाइस) का भी समर्थन कर सकता है।

5G को उपलब्ध स्पेक्ट्रम नियामक प्रतिमानों और बैंडों की एक विस्तृत श्रृंखला में स्पेक्ट्रम के हर बिट का अधिकतम लाभ उठाने के लिए डिज़ाइन किया गया है – 1 गीगाहट्र्ज़ से नीचे के निम्न बैंड से लेकर 1 गीगाहट्र्ज़ से 6 गीगाहट्र्ज़ के मध्य बैंड तक, मिलीमीटर तरंग के रूप में जाने वाले उच्च बैंड तक।

5G 4G की तुलना में काफी तेज हो सकता है, 20 गीगाबिट–प्रति–सेकंड (Gbps) पीक डेटा दर और 100+ मेगाबिट–प्रति–सेकंड (एमबीपीएस) औसत डेटा दर तक पहुंचा सकता है।

5G को ट्रैफ़िक क्षमता और नेटवर्क दक्षता में 100x वृद्धि का सपोर्टकरने के लिए डिज़ाइन किया गया है। अधिक तात्कालिक, रीयल–टाइम पहुंच प्रदान करने के लिए 5G में विलंबता काफी कम है और एंड–टू–एंड विलंबता में 10x की कमी आई है ।

5G का उपयोग कहाँ किया जा रहा है?

मोटे तौर पर, 5G का उपयोग तीन मुख्य प्रकार की कनेक्टेड सेवाओं में किया जाता है, जिसमें उन्नत मोबाइल ब्रॉडबैंड, महत्वपूर्ण संचार और बड़े पैमाने पर IOT शामिल हैं। हमारे स्मार्टफ़ोन को बेहतर बनाने के अलावा, 5G मोबाइल तकनीक तेज़, अधिक समान डेटा दरों, कम विलंबता और कम लागत–प्रति–बिट के साथ VR और AR जैसे नए इमर्सिव अनुभव प्रदान कर सकती है।

5G नई सेवाओं को सक्षम कर सकता है जो अति–विश्वसनीय, उपलब्ध, कम–विलंबता लिंक जैसे महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे, वाहनों और चिकित्सा प्रक्रियाओं के रिमोट कंट्रोल के साथ उद्योगों को बदल सकता है।

उपभोक्ता 5G का उपयोग कैसे करते हैं?

2022 में औसत उपभोक्ता अपने स्मार्टफोन पर प्रति माह लगभग 11 जीबी डेटा का उपयोग करने की उम्मीद करता है। यह वीडियो ट्रैफ़िक में विस्फोटक वृद्धि से प्रेरित है क्योंकि मोबाइल, मीडिया और मनोरंजन का स्त्रोत बन रहा है, साथ ही साथ हमेशा बड़े पैमाने पर विकास –कनेक्टेड क्लाउड कंप्यूटिंग और अनुभव को प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है।

4G ने पूरी तरह से बदल दिया कि हम सूचनाओं का उपभोग कैसे करते हैं। पिछले एक दशक में हमने मोबाइल ऐप उद्योग में वीडियो स्ट्रीमिंग, राइड शेयरिंग, फूड डिलीवरी और बहुत कुछ ऐसी सेवाओं का उछाल देखा है।

5G नए उद्योगों के लिए मोबाइल पारिस्थिति की तंत्र का विस्तार करेगा। यह असीमित वास्तविकता (एक्सआर), निर्बाध आईओटी क्षमताओं, नए उद्यम अनुप्रयोगों, स्थानीय इंटरैक्टिव सामग्री और तत्काल क्लाउड एक्सेस जैसे अत्याधुनिक उपयोगकर्ता अनुभवों में योगदान देगा।

व्यवसाय 5G का उपयोग कैसे करते हैं?

उच्च डेटा गति और बेहतर नेटवर्क विश्वसनीयता के साथ, 5G का व्यवसायों पर जबरदस्त प्रभाव पड़ेगा। 5G के लाभ व्यवसायों की दक्षता में वृद्धि करेंगे, साथ ही उपयोगकर्ताओं को अधिक जानकारी तक तेजी से पहुंच प्रदान करेंगे।

उद्योग के आधार पर, कुछ व्यवसाय 5G क्षमताओं का पूर्ण उपयोग कर सकते हैं, विशेष रूप से उन्हें जिन्हें उच्च गति, कम विलंबता और नेटवर्क क्षमता की आवश्यकता होती है, जिन्हें प्रदान करने के लिए 5G को डिज़ाइन किया गया है। उदाहरण के लिए, स्मार्ट फैक्ट्रियां परिचालन उत्पादकता और सटीकता बढ़ाने में मदद करने के लिए औद्योगिक ईथरनेट चलाने के लिए 5G का उपयोग कर सकती हैं।

शहर 5G का उपयोग कैसे करते हैं?

स्मार्ट सिटी में रहने वाले लोगों के जीवन को बदलने के लिए विभिन्न तरीकों से 5G का उपयोग किया जा सकता है–मुख्य रूप से लोगों और चीजों के बीच अधिक कनेक्टिविटी, उच्च डेटा गति, और ऑटोमोटिव सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में पहले की तुलना में कम विलंबता जैसी अधिक क्षमता प्रदान करना, इन्फ्रास्ट्रक्चर, वीआर, और मनोरंजन को बढ़ाने के लिए किया जा सकेगा।

5G कितना तेज है?

5G को IMT –2020 आवश्यकताओं के आधार पर 20 Gbps की पीक डेटा दर देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। लेकिन 5G इससे कहीं ज्यादा तेज है। 5G को नए स्पेक्ट्रम में विस्तार करके अधिक नेटवर्क क्षमता प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

5G अधिक तत्काल प्रतिक्रिया के लिए बहुत कम विलंबता भी प्रदान कर सकता है ताकि डेटा दर लगातार उच्च बनी रहे – तब भी जब उपयोगकर्ता इधर–उधर हो रहे हों। और नया 5G एनआर मोबाइल नेटवर्क गीगाबिट एलटीई कवरेज फाउंडेशन द्वारा समर्थित है, जो सर्वव्यापी गीगाबिट–क्लास कनेक्टिविटी प्रदान कर सकता है।

5G कैसे काम करता है?

4G एलटीई की तरह, 5जी भी ओएफडीएम–आधारित (ऑर्थोगोनल फ्रीक्वेंसी–डिवीज़न मल्टीप्लेक्सिग) है और उसी मोबाइल नेटवर्किंग सिद्धांतों के आधार पर काम करेगा। हालांकि, नया 5G एनआर (न्यू रेडियो) एयर इंटरफेस ओएफडीएम को और बेहतर बनाएगा ताकि उच्च स्तर का लचीलापन और मापनीयता प्रदान की जा सके।

5G न केवल 4G LTE की तुलना में तेज, बेहतर मोबाइल ब्रॉडबैंड सेवाएं प्रदान करेगा, बल्कि यह मिशन–महत्वपूर्ण संचार और बड़े पैमाने पर IoT को जोड़ने जैसे नए सेवा क्षेत्रों में भी विस्तार करेगा।

अगर मुझे 5G चाहिए तो क्या मुझे नया फोन चाहिए?

हाँ, यदि आप 5G नेटवर्क का उपयोग करना चाहते हैं तो आपको एक नया स्मार्टफोन प्राप्त करना होगा जो 5G का समर्थन करता हो। अभी भारत में कई कम्पनी द्वारा 5G कम्पेटिबल मोबाइल फ़ोन बाजार में आ चुके हैं। ऐसे कई नए मोबाइल फोन उपलब्ध हैं जो 5G का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, और दुनिया भर में 5G वायरलेस नेटवर्क का समर्थन करते हैं। जैसे–जैसे 5G आगे बढ़ेगा, अधिक स्मार्टफोन उपलब्ध होंगे।

क्या अब 5G उपलब्ध है?

हाँ, 5G पहले से ही मौजूद है, और वैश्विक ऑपरेटरों ने 2019 की शुरुआत में नए 5G नेटवर्क लॉन्च करना शुरू कर दिया था। सभी प्रमुख फोन निर्माता 5G फोन का निर्माण कर रहे हैं। और जल्द ही, और भी लोग 5G का उपयोग करने में सक्षम हो सकते हैं।

5G को 60+ देशों में लागू किया गया है तथा और देशों में इसे लागू किये जाने की कोशिश अभी जारी है। उच्च गति और कम विलंबता को लेकर उपभोक्ता बहुत उत्साहित हैं। लेकिन 5G मिशन–महत्वपूर्ण सेवाओं, उन्नत मोबाइल ब्रॉडबैंड और बड़े पैमाने पर IOT क्षमता प्रदान करके इन लाभों से आगे निकल जाता है। हालांकि यह अनुमान लगाना कठिन है कि सभी के पास 5G तक पहुंच कब होगी, हम इसके पहले वर्ष में 5G लॉन्च की शानदार गति देख रहे हैं और हम उम्मीद करते हैं कि 2022 और उसके बाद और अधिक देश अपने 5G नेटवर्क लॉन्च करेंगे।

नरेश कुमार ठागरिया
उप महाप्रबन्धक (आई.टी.)

मंजिल अब दूर नहीं

रूक गए अगर तुम, तो रह जाओगे पीछे,
दूर नहीं अब मंजिल, बस कुछ ही मोड़ और है।
ओझल ना हो मंजिल, एक पल भी नजरों से,
हर पल करती, दिल की धड़कन यही शोर है।

चाहे गरजें बादल या बिजली ही चमके,
आंधियाँ हों घनी या बारिश घनघोर बरसे,
हर मुश्किल पार कर, जाना उसकी ओर है,
दूर नहीं अब मंजिल, बस कुछ ही मोड़ और है।

चलते–चलते पैर थक जाएँ चाहे,
या पथरीले रास्तों में बाधा कोई डाले,
घने अंधियारे के बाद, आती इक भोर है।
रूक गए अगर तुम तो रह जाओगे पीछे,
दूर नहीं अब मंजिल, बस कुछ ही मोड़ और है।

मनीष कुमार
प्रबन्धक (सचिवीय)

योग दिवस

" तरूण सागर जी के 20 मंत्र "

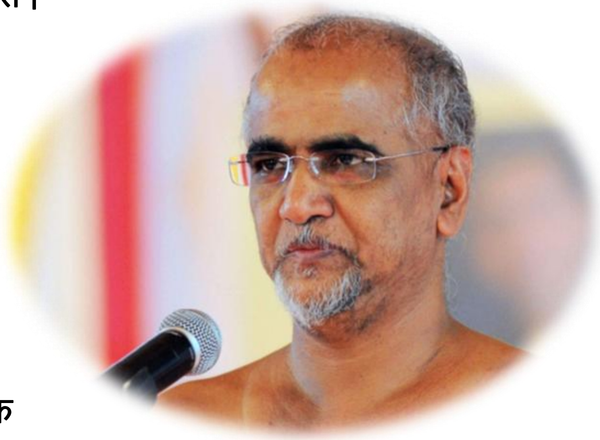

1. खुद की कमाई से कम खर्च हो ऐसी जिन्दगी बनाओ।
2. दिन में कम से कम 3 लोगों की प्रशंसा करो।
3. खुद की भूल स्वीकारने में कभी भी संकोच मत करो।
4. किसी के सपनों पर हँसों मत।
5. आपके पीछे खडे व्यक्ति को भी कभी कभी आगे जाने का मौका दो।
6. रोज हो सके तो सूरज को उगता हुए देखो।
7. खूब जरूरी हो तभी कोई चीज उधार लो।
8. किसी के पास से कुछ जानना हो तो विवेक से दो बार पूछो।
9. कर्ज और शत्रु को कभी बडा मत होने दो।
10. स्वयं पर पूरा भरोसा रखो।
11. प्रार्थना करना कभी मत भूलो, प्रार्थना में अपार शक्ति होती है।
12. अपने काम से मतलब रखो।
13. समय सबसे ज्यादा कीमती है, इसको फालतू कामों में खर्च मत करो।
14. जो आपके पास है, उसी में खुश रहना सीखो।
15. बुराई कभी भी किसी की भी मत करो, क्योंकि बुराई नाव में छेद समान है, बुराई/छेद छोटा हो तो भी बडी नाव डुबो ही देती है।
16. हमेशा सकारात्मक सोच रखो।
17. हर व्यक्ति एक हुनर लेकर पैदा होता है, बस उस हुनर को दुनिया के सामने लाओ।
18. कोई काम छोटा नहीं होता हर काम बडा होता है, जैसे कि सोचो जो काम आप कर रहे हो अगर वह काम आप नही करते तो दुनिया पर क्या असर होता।
19. सफलता उनको ही मिलती है जो कुछ करते हैं।
20. कुछ पाने के लिए कुछ खोना नहीं, बल्कि कुछ करना पडता है।

अनिल कुमार खण्डेलवाल
वरि. प्रबन्धक (वित्त)

हर घर तिरंगा

" संयुक्त परिवार बनाम एकल परिवार "

संयुक्त परिवार हमारे देश, हमारी संस्कृति की पहचान हैं क्योंकि सनातन समय से "वसुधैव कुटुंबकम्" भारत की पहचान रहा है इसका अर्थ है– धरती ही परिवार है। पूरी धरती को परिवार की संज्ञा दी गई है यानि हम सब धरती परिवार के सदस्य हैं और यह एक संयुक्त परिवार है। चूंकि परिवर्तन प्रकृति का नियम है इसलिए इस सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन स्वाभाविक था। बदलते वक्त और जरूरत के हिसाब से परिवार संयुक्त और एकल परिवार का रूप ले रहे हैं।

परिवार हमारे समाज की बेसिक यूनिट है। जैसा कि हम सब जानते हैं, कि भारतीय समाज में संयुक्त परिवार ही पाए जाते थे,

जिनमे परिवार के सभी सदस्य एक साथ रहते है। परन्तु समय के साथ साथ परिवार छोटे होते गए, एवं अब अधिकतम एकल परिवार पाए जाते है। इस कारण यह चर्चा अक्सर होती रहती है, कि कौन सा परिवार बेहतर है, संयुक्त या एकल। परन्तु मेरा मानना है कि परिवार चाहे संयुक्त हो या एकल, इसकी खुशियां सदस्यों की सोच और व्यवहार पर ही निर्भर करती हैं। हर परिवार के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष हैं। सुरक्षा की दृष्टि से संयुक्त परिवार की खूबियाँ है तो सुविधा की दृष्टि से एकल परिवार के भी अपने फायदे है।

संयुक्त परिवार की संरचना सदैव अखंडता तथा एकता का संदेश देती आई है। जब भी परिवार में कोई बुरी परिस्थिति आती है, तो परिवार के सभी सदस्य एकजुट होकर उसका हल ढूंढ लेते हैं। बच्चों को छोड़कर ऑफिस या कही बाहर जाना है तो भी निश्चिंतता के साथ जा सकते हैं। यहां बच्चों की जिम्मेदारी सिर्फ माता–पिता की नहीं बल्कि पूरे परिवार की होती है। एकल परिवार के मुकाबले संयुक्त परिवार में काफी अधिक अनुशासन एवं नियंत्रण साफ देखा जा सकता है। ऐसे परिवारों में बच्चे परिवार के संस्कार जैसे बडों का आदर करना, उनकी आज्ञा का पालन करना आदि भी स्वतः ही सीख जाते हैं। घर में पूजा–पाठ, कथा और अन्य

कई सारे धार्मिक कार्य किए जाते हैं। इससे न केवल आने वाली अगली पीढी भी अपनी संस्कृति को समझ पाती है, अपितु समाज में भी एक सकारात्मक संदेश पहुंचता है। संयुक्त परिवारों में त्योहारों और उत्सवों का आनंद देखते ही बनता है। परिवार में सभी लोग एक दूसरे को संकट की घडी में सहायता देते हैं। खासकर बुजुर्गों और विधवा महिलाओं के लिए संयुक्त परिवार बहुत मायने रखता है।

हर सिक्के के 2 पहलू होते हैं। जहाँ संयुक्त परिवार के फायदे है, वह वर्तमान समय में संयुक्त परिवार अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। अधिकतर संयुक्त परिवार रूढ़िवादिता का केन्द्र है, जहां आज भी स्त्रियों को पुरूषों के मुकाबले तुच्छ समझा जाता है। संयुक्त परिवार हमेशा से ही अपनी सांस्कृतिक प्रथाओं और रीति–रिवाजों को सर्वोपरि रखता आया है, भले ही वह नकारात्मक ही क्यों न हों।

संयुक्त परिवारों में आपसी मनमुटाव अथवा मतभेद काफी देखा जाता है। यह आवश्यक नहीं है, कि सभी की विचारधाराएं एक जैसी हो। अक्सर सदस्यों के बीच छोटी–छोटी बातों को लेकर व्यर्थ ही संघर्ष शुरू हो जाते हैं। संयुक्त परिवारों में घर के बड़े बुजुर्गो का ही राज चलता है। उनके द्वारा लिए गए प्रत्येक निर्णय को सभी सदस्यों को स्वीकार करना ही पडता है। ऐसे हालात में परिवार के दूसरे सदस्यों की इच्छाओं को पूरी तरह से दबा दिया जाता है।

कई बार संयुक्त परिवारों में घर के गिने–चुने सदस्य ही धन कमाकर पूरे परिवार का पालन पोषण करते हैं। घर के दूसरे सभी सदस्य अपनी जरूरतों के लिए उन पर निर्भर रहते हैं, जो संयुक्त परिवार का सबसे बड़ा दोष है। पहले समय में सीमित आय में घर खर्च पूरे हो पाते थे परन्तु बढती महंगाई तथा अन्य सामाजिक बदलाव के कारण इतने बड़े परिवार का खर्चा चला पाना वर्तमान समय में बहुत मुश्किल कार्य होता है। परिवारिक बोझ के कारण धनोपार्जन करने वाले सदस्यों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

इन्ही सब कारणों से आज संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं एवं बहुत तेजी से एकल परिवारों का उदय हो रहा है। आज के समय में इस महंगाई भरे दौर में अपनी निजी जरूरतों को पूरा कर पाना भी एक कठिन काम हो गया है। ऐसे हालात में एकल परिवार ही सरल और सुगम जीवन जीने के लिए एक महत्वपूर्ण विकल्प बनकर सामने आता है। एकल परिवार में सदस्यों की संख्या कम होने के कारण उनकी निजी जरूरतों को पूरा कर पाना थोडा सरल हो जाता है। परिवार को चलाने के लिए माता पिता दोनों ही कार्य करते हैं। परिवार में सीमित सदस्य होने के कारण कार्य का ज्यादा बोझ भी नहीं रहता है। एकल परिवार में किसी भी महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा करने के पश्चात शीघ्रता से निर्णय लिया जाता है। सभी के साथ चर्चा के पश्चात आपस में पारिवारिक कलह होने की संभावना भी कम हो जाती हैं और सदस्यों में मतभेद भी कम होता है। एकल परिवार में सभी लोग एक नए और आशावादी जीवन शैली को अपनाने के लिए कभी भी पीछे नहीं हटते हैं। एक नए समाज से जुड कर एकल परिवार अपने विचारों में भी परिवर्तन लाते हैं। एकल परिवार के सदस्यों को अपने–अपने ढँग से कार्य और विचार करने की पूरी स्वतंत्रता होती है।

एक प्रख्यात कहावत है, कि "छोटा परिवार सुखी परिवार" यह कहावत एकल परिवार पर एकदम सटीक बैठती है। परिवार का मुखिया केवल अपने परिवार के हितों की पूर्ति करने के लिए उत्तरदायी होता है। कम सदस्यों के कारण सभी के व्यक्तिगत हितों की पूर्ति कर पाना संयुक्त परिवार के मुकाबले सरल बन जाता है। साथ ही

एकल परिवार में सभी सदस्यों को अपनी निजता का अवसर मिलता है, जो कि संयुक्त परिवार में असम्भव है। माता पिता अपने बच्चों की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए सामर्थ्य अनुसार स्कूल एवं कॉलेज का चुनाव कर सकते हैं, जो कि संयुक्त परिवार में कठिन होता है।

इस प्रकार आज के समय में संयुक्त परिवारों के असंख्य फायदों के बावजूद एकल परिवारों का उदय समय की आवश्यकता है। इसका एक समाधान आजकल एक नए तरीके के संयुक्त परिवारों के रूप में देखने को मिल रहा है जहाँ पर माता पिता, पुत्र–पुत्रवधू आस पास या एक ही कॉलोनी में या फिर एक मकान की अलग अलग मंजिलों पर अलग अलग रह रहे हैं। अपने रोजमर्रा के जीवन में एकल परिवार के लाभ एवं किसी भी समस्या एवं त्यौहार के समय एकजुट हो कर संयुक्त परिवार का आनंद उठा रहे है। यह आज के समय का सबसे तर्कपूर्ण, आसान एवं सटीक समाधान है। अंग्रेजी में कहते हैं न, विन–विन सिचुएशन है।

इस विषय पर हम सभी को सोचने समझाने की आवश्यकता है। परिवार के अलग रहने को प्रेस्टीज इशू बनाने के स्थान पर समय की मांग को समझते हुए, बच्चों को अपने से अलग परन्तु आस पास रखने का प्रयास आपको और उन्हें हमेशा दिल से साथ रखेगा। माता पिता को भी अपनी निजता के साथ समझौता नहीं करना पड़ेगा। यदि 50–55 की उम्र में माता पिता को खिचड़ी, लौकी आदि खाना अच्छा लगता है, तो न तो उन्हें जबरन राजमा, छोले खाने पड़ेंगे, और न ही बेटे बहू को मन मार कर खिचड़ी खानी होगी। दोनों अपनी अपनी पसंद, स्वास्थ्य और उम्र के अनुसार खा–पी सकेंगे।

पोते पोती के साथ जब चाहें तब दादा दादी खेल सकेंगे परन्तु उनको पूरी तरह पालना उनके माता पिता की जिम्मेदारी होगी। परन्तु जब उन्हें जरूरत होगी तब दादा दादी आसानी से सहायता के लिए उपलब्ध होगे। इसी प्रकार माता पिता की हर रोज की जिम्मेदारी बेटे बहू की नहीं होगी, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त उपलब्ध हो सकेंगें। सभी त्यौहार पूरा परिवार मिल जुल कर खुशी से मनाएंगे एवं किसी को न तो अकेलापन महसूस होगा, और न ही निजता से समझौता करना होगा। इसलिए सभी को वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार बेटे के विवाह के साथ ही उसके लिए एक अलग घर (जो कि आस पास ही हो, चाहे किराये का ही हो) की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे कि घर में केवल खुशियों का प्रवेश हो न कि कलह कलेश का।

जरा सोचिये..................

अंजू गर्ग
प्रबन्धक (सचि.)

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में सम्पादित विभिन्न आयोजनों का विवरण

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय का जयपुर दौरा (दिनांक 03.04.2023)

श्री कुलदीप नारायण (आई.ए.एस.), अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, हडको द्वारा जयपुर प्रवास के दौरान राज्य सरकार के विभिन्न विभागों और उनकी आवासीय परियोजनाओं से सम्बन्धित वरिष्ठ अधिकारियों से चर्चा की गई तथा जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के आपरेशनस् पर भी समीक्षा की गई।

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय निरीक्षण के दौरान कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ माननीय अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा बैठक की गई। जिसमें जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के **Operational Performance** पर क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया गया जिसमें संभावित परियोजनाएं, पाईपलाईन परियोजना, **MOU Targets** की प्राप्ति, **CSR Projects** इत्यादि शामिल रहे।

<u>Review of Operational Performance of JRO</u>

- प्रस्तुतिकरण के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा अवगत करवाया गया कि वित्त वर्ष 2022–23 में रू. 2554.50 करोड़ की परियोजनाएं स्वीकृत की गई है तथा रू. 1431.11 करोड की ऋण राशि अवमुक्त की गई है। क्षेत्रीय कार्यालय में पाईपलाइन योजनाओं में से RTDC एवं RSRDC की रू. 4800.00 करोड़ की योजना मूल्यांकन कर Draft Appraisal Report मुख्यालय प्रेषित की जा चुकी है।
- प्रस्तुतीकरण के दौरान क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हडको द्वारा राज्य में पूर्व में स्वीकृत आवासीय एवं अधोसरंचना विकास की योजनाओं को विस्तारपूर्वक अवगत करवाया गया। अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा योजनाओं की ROI, Moratorium period, Repayment mechanism, Progress of the scheme, Security mechanism इत्यादि पर विस्तृत चर्चा कर भविष्य में मूल्यांकन प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाएं जाने के कम में अपने सुझाव दिये।
- अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय को जयपुर में हडको Properties झालाना डूंगरी स्थित हडको भवन, हडको आवासीय फ्लैटस एवं नेहरू प्लेस स्थिति रिक्त निवर्तमान कार्यालय की वर्तमान वस्तुस्थिति से अवगत करवाया गया।

❖ ग्रीन सिटी के विकास के तहत प्रत्येक सदस्य एक वृक्ष की भावना के साथ अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय द्वारा ज्योति नगर स्थित हडको कार्यालय में पौधा रोपित किया गया।

~~*~~*~~

ओवरसीज प्रोफेशनल्स के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (Formal Solutions to Informal Settlements) के अंतर्गत दिनांक 29 मार्च से 31 मार्च 2023 तक जयपुर दौरा

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार एवं मानव बसाव एवं प्रबंध संस्थान (एच.एस.एम.आई.) नई दिल्ली द्वारा ओवरसीज प्रोफेशनल्स के प्रशिक्षण हेतु दिनांक 29 मार्च से 31 मार्च 2023 तक "Formal Solutions to Informal Settlements" के संबंध में जयपुर का दौरा किया गया। प्रशिक्षण के तहत प्रतिभागियों द्वारा विभिन्न योजनाओं के अध्ययन के क्रम में जयपुर स्थित आवासीय एवं इंफ्रास्ट्रक्चर विकास कार्यों तथा ऐतिहासिक पुरातत्व स्थलों, स्मारकों का अध्ययन किया गया।

दिनांक 29.03.2023

श्री पवन अरोड़ा, IAS, आयुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा राजस्थान राज्य में गठन (वर्ष 1970) से अबतक विभिन्न आवासीय परियोजनाओं के माध्यम से जन को उपलब्ध करवाये गये आवासों / आवासन मण्डल के योगदान के क्रम में अवगत करवाया गया। साथ ही आवासन मण्डल की नवीन विकास कार्यो / आवासीय योजनाएं जैसे कि विधायक आवासीय योजना, वर्ल्ड क्लास सिटी पार्क, मानसरोवर व अन्य आवासीय (EWS / LIG) योजनाओं के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया गया।

इस दौरान दैनिक समाचारों में प्रकाशित समाचार निम्न है:—

समय से पहले प्रोजेक्ट पूरे करने की कार्यशैली की सराहना की

19 देशों के 25 प्रतिनिधियों ने राजस्थान हाउसिंग बोर्ड की परियोजनाओं का अध्ययन किया

सिटी रिपोर्टर | जयपुर

ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटलमेंट्स के तहत 19 देशों के 25 प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल ने बुधवार को आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन किया। विदेश मंत्रालय एवं मानव प्रबंधन बसाव संस्थान नई दिल्ली द्वारा आटीईसी पाठ्यक्रम योजना के तहत यह प्रतिनिधिमंडल तीन दिवसीय जयपुर के स्टडी टूर पर है। आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के जरिए जयपुर के मशहूर सिटी पार्क, विधायक फ्लैट्स, अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट सहित अन्य परियोजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने विधायक आवास योजना के निर्माण की गति पर भी हैरानी जाहिर करते हुए कहा कि मंडल ने किसी प्राइवेट बिल्डर से भी तेज गति से काम कर दिखा दिया। प्रतिनिधि दल गुरुवार को सिटी पार्क, विधायक आवास परियोजना और अफोर्डेबल हाउसिंग प्रोजेक्ट का भी दौरा करेगा।

आयुक्त ने प्रजेंटेशन के दौरान बताया कि मंडल ने आवासों के अलावा लीक से हटकर भी कई नवाचार किए हैं। उन्होंने इस दौरान कोचिंग हब, सिटी पार्क, चौपटियां, कॉन्सटीट्यूशन क्लब जैसी परियोजना के बारे में भी बताया। उल्लेखनीय है कि दुनिया के 19 देशों के 25 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का प्रतिनिधिमंडल। प्रतिनिधिमंडल प्रदेश के अन्य विभागों की प्रमुख योजनाओं का भी अध्ययन करेगा। इस अवसर पर हुडको से वर्षा पुनहानी, सुधीर भटनागर, मुख्य अभियंता प्रथम केसी मीणा, मुख्य अभियंता द्वितीय जीएस बाघेला, मुख्य अभियंता मुख्यालय मनोज गुप्ता सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

19 देशों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने हाउसिंग बोर्ड की परियोजनाओं का किया अध्ययन

प्रतिनिधिमंडल ने बेहतर प्रबंधन के लिए मंडल की कार्यशैली की दिल खोलकर की सराहना

दैनिक पर्यटन बाजार

जयपुर। विदेश मन्त्रालय एवं 'मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान ([illegible]) नई दिल्ली द्वारा [illegible] पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किये जा रहे ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटेलमेंट्स के अन्तर्गत 19 देशों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल ने बुधवार को आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन किया।

आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के जरिए जयपुर के मशहूर सिटी पार्क, विधायक फ्लैट्स, अफॉर्डेबल हाउसिंग प्रोजक्ट (मुख्यमंत्री जन आवास योजना) सहित कई अन्य परियोजनाओं का विस्तार से परिचय दिया। प्रस्तुतिकरण को देखकर प्रतिनिधिगण हतप्रभ थे कि कोरोना में जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब मंडल उसी गति से कैसे काम पर पाया। उन्होंने विधायक आवास योजना के निर्माण की गति पर भी हैरानी जाहिर करते हुए कहा कि मंडल ने किसी प्राइवेट बिल्डर से भी तेज गति से काम कर दिखा दिया कि बेहतर नेतृत्व के भी कुछ मायने होते हैं। प्रतिनिधि दल गुरुवार को सिटी पार्क, विधायक आवास परियोजना और अफॉर्डेबल हाउसिंग प्रोजक्ट का भी दौरा करेगा।

आयुक्त ने प्रजेंटेशन के दौरान बताया कि मंडल ने आवासों के अलावा लीक से हटकर भी कई नवाचार किए हैं। उन्होंने इस दौरान कोचिंग हब, सिटी पार्क, चौपटियां, कॉन्स्टिट्यूशन क्लब जैसी परियोजना के बारे में भी बताया। प्रतिनिधिमंडल ने सभी योजनाओं को दिलचस्पी से देखा और सराहा भी। उल्लेखनीय है कि दुनिया के 19 देशों के 25 अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों का प्रतिनिधिमंडल तीन दिवसीय जयपुर के स्टडी टूर पर है। प्रतिनिधिमंडल प्रदेश के अन्य विभागों की प्रमुख योजनाओं का भी अध्ययन करेगा। इस अवसर पर हडको से श्रीमती वर्षा पुनहानी, सुधीर भटनागर, मुख्य अभियंता प्रथम केसी मीणा, मुख्य अभियंता द्वितीय जीएस बाघेला, मुख्य अभियंता मुख्यालय मनोज गुप्ता सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दिनांक 29.03.2023 को प्रतिनिधि मण्डल ने **विधान सभा भवन** का दौरा किया गया। दौरे के दौरान प्रतिनिधि मण्डल के साथ **श्री महावीर प्रसाद शर्मा, प्रमुख सचिव, राजस्थान विधान सभा, श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख, हडको, श्रीमती वर्षा पुन्हानी, Sr. Fellow, HSMI-HUDCO** साथ में थे। प्रतिनिधि मण्डल ने विधान सभा भवन में डिजिटल संग्रहालय का दौरा भी किया गया। जहाँ पर प्रतिभागियों द्वारा राजस्थान राज्य की जानकारी जैसे भौगोलिक स्थिति, कला, संस्कृति, विधान सभा की कार्य प्रणाली, राज्य में हो रहे विकास कार्यो इत्यादि के क्रम में जानकारी प्राप्त की।

जंतर–मंतर स्थित वैधशाला का भ्रमण करवाया गया तथा बताया गया कि पूर्वकाल में यहॉ से मौसम, हवाओं के रूख, बारिश के अनुमान इत्यादि के बारे में जानकारी प्राप्त की जाती थी। तत्पश्चात दल को जल–महल की पाल पर ले जाया गया एवं नगर निगम द्वारा किए गए सौंदर्यीकरण के कार्यों का अवलोकन करवाया गया। ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल को जयपुर की ऐतिहासिक धरोहर हवामहल एवं Albert Hall Museum का भ्रमण करवाया गया। साथ ही इसके इतिहास के बारे में जानकारी प्रदान की गई।

दिनांक 30.03.2023

ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के **जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में आगमन पर** श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख के सानिघ्य में सभी आगंतुकों का राजस्थानी संस्कृति व परम्परा के साथ स्वागत किया गया। ग्रीन सिटी के विकास के तहत ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल के प्रत्येक सदस्य द्वारा “प्रत्येक एक वृक्ष” की भावना के साथ पौधा रोपित किया गया। हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा किए जा रहे कार्यों का प्रस्तुतीकरण दिया गया।

JAIPUR REGIONAL OFFICE
Housing & Urban Development Corporation Limited
"OVERSEAS PROFESSIONALS ON STUDY VISIT TO JAIPUR"

साथ ही **राजस्थान विधानसभा के ठीक सामने बन रहे विधायक आवास योजना प्रोजेक्ट** का ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल ने अवलोकन किया। अत्याधुनिक सुविधायुक्त सैम्पल फ्लैट देखकर ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल द्वारा ऑफिस, ड्राइंग रूप, गेस्ट रूम की डिजाइन और गुणवता देखकर राजस्थान आवासन मण्डल के कार्यो की सराहना की।

ओवरसीज प्रोफेशनल्स दल को मानसरोवर स्थित सिटी पार्क का दौरा करवाया गया। दल का राजस्थानी संस्कृति व परम्परा के साथ स्वागत किया गया।

इस दौरान दैनिक समाचारों में प्रकाशित समाचार निम्न हैः–

19 देशों के प्रतिनिधि मंडल ने सिटी पार्क की दिल खोलकर प्रशंसा

आउटस्टैंडिंग, ब्यूटीफुल, नेवर सीन बिफोर सच ब्यूटी, माइंड ब्लोइंग प्लेस जैसे विशेषणों से सिटी पार्क को नवाजा

P3 Police Public Politics

जयपुर। 31 मार्च। आउटस्टैंडिंग, ब्यूटीफुल, नेवर सीन बिफोर सच ब्यूटी, माइंड ब्लोइंग प्लेस, नेचुरल ब्यूटी यह सारे विशेषण 19 देशों से आए 25 प्रतिनिधियों ने गुरुवार को सिटी पार्क की विजिट के दौरान विजिटर बुक में लिखें। सिटी पार्क के भ्रमण के दौरान प्रतिनिधि मण्डल ने मध्यम मार्ग प्लाजा, रॉक फाउण्टेन, लेक, 213 फीट ऊँचा फ्लैग मास्ट जिस पर भारतीय तिरंगा शान से लहरा रहा है एवं विभिन्न स्क्लपचर्स को देखा एवं मुक्तकंठ से प्रशंसा की। सिटी पार्क में हुडको के तत्वाधान में आए मेहमानों का राजस्थानी अंदाज में माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मेहमानों ने गोल्फ कार में बैठकर सिटी पार्क का भ्रमण किया और आने वाले स्थानीय पर्यटकों से भी बातचीत की। इससे पहले प्रतिनिधि मण्डल ने राजस्थान विधायक आवास परियोजना, मुख्यमंत्री जन आवास योजना सहित कई अन्य परियोजनाओं का दौरा किया। दल के सभी प्रतिनिधि मंडल द्वारा किए गए निर्माण को देखकर काफी प्रभावित और प्रसन्न नजर आए। गौरतलब है कि विदेश मन्त्रालय एवं ÷मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान (॥स्स्ह्) नई दिल्ली द्वारा ITEC पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किये जा रहे ÷ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटेलमेंट्स÷ के अन्तर्गत 19 देशों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल राजस्थान आए हैं। बुधवार को प्रतिनिधिमंडल ने आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर आकर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन भी अध्ययन किया था। आवासन आयुक्त श्री पवन अरोड़ा ने 19 देशों से आए प्रतिनिधिमंडल का आभार जताया और उन्हें जयपुर फिर से आने का न्योता भी दिया।

19 देशों के प्रतिनिधि मंडल ने सिटी पार्क की दिल खोलकर प्रशंसा

आउटस्टैंडिग, ब्यूटीफुल, नेवर सीन बिफोर सच ब्यूटी, माइंड ब्लोइंग प्लेस जैसे विशेषणों से सिटी पार्क को नवाजा

बनास वरदान

जयपुर (का.स.)। आउटस्टैंडिंग, ब्यूटीफुल, नेवर सीन बिफोर सच ब्यूटी, माइंड ब्लोइंग प्लेस, नेचुरल ब्यूटी यह सारे विशेषण 19 देशों से आए 25 प्रतिनिधियों ने गुरुवार को सिटी पार्क की विजिट के दौरान विजिटर बुक में लिखें।

सिटी पार्क के भ्रमण के दौरान प्रतिनिधि मण्डल ने मध्यम मार्ग प्लाजा, रॉक फाउण्टेन, लेक, 213 फीट ऊँचा फ्लैग मास्ट जिस पर भारतीय तिरंगा शान से लहरा रहा है एवं विभिन्न स्क्ल्पचर्स को देखा एवं मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

सिटी पार्क में हुडको के तत्वाधान में आए मेहमानों का राजस्थानी अंदाज में माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मेहमानों ने गोल्फ कार में बैठकर सिटी पार्क का भ्रमण किया और आने वाले स्थानीय पर्यटकों से भी बातचीत की। इससे पहले प्रतिनिधि मण्डल ने राजस्थान विधायक आवास परियोजना, मुख्यमंत्री जन आवास योजना सहित कई अन्य परियोजनाओं का दौरा किया। दल के सभी प्रतिनिधि मंडल द्वारा किए गए निर्माण को देखकर काफी प्रभावित और प्रसन्न नजर आए।

गौरतलब है कि विदेश मन्त्रालय एवं मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान नई दिल्ली द्वारा द्वुञ्चश्वष्ट पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किये जा रहे ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटेलमेंट्स के अन्तर्गत 19 देशों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल राजस्थान आए हैं। बुधवार को प्रतिनिधिमंडल ने आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर आकर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन भी अध्ययन किया था।

19 देशों के प्रतिनिधि मंडल ने सिटी पार्क की दिल खोलकर प्रशंसा

बढ़ता राजस्थान

जयपुर(का.स.)। आउटस्टैंडिंग, ब्यूटीफुल, नेवर सीन बिफोर सच ब्यूटी, माइंड ब्लोइंग प्लेस, नेचुरल ब्यूटी यह सारे विशेषण 19 देशों से आए 25 प्रतिनिधियों ने गुरुवार को सिटी पार्क की विजिट के दौरान विजिटर बुक में लिखें।

सिटी पार्क के भ्रमण के दौरान प्रतिनिधि मण्डल ने मध्यम मार्ग प्लाजा, रॉक फाउण्टेन, लेक, 213 फीट ऊँचा फ्लैग मास्ट जिस पर भारतीय तिरंगा शान से लहरा रहा है एवं विभिन्न स्क्ल्पचर्स को देखा एवं मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

सिटी पार्क में हुडको के तत्वाधान में आए मेहमानों का राजस्थानी अंदाज में माला एवं साफा पहनाकर स्वागत किया गया। मेहमानों ने गोल्फ कार में बैठकर सिटी पार्क का भ्रमण किया और आने वाले स्थानीय पर्यटकों से भी बातचीत की। इससे पहले प्रतिनिधि मण्डल ने राजस्थान विधायक आवास परियोजना, मुख्यमंत्री जन आवास योजना सहित कई अन्य परियोजनाओं का दौरा किया। दल के सभी प्रतिनिधि मंडल द्वारा किए गए निर्माण को देखकर काफी प्रभावित और प्रसन्न नजर आए।

गौरतलब है कि विदेश मन्त्रालय एवं मानव प्रबन्धन बसाव संस्थान (॥स्स्ह्) नई दिल्ली द्वारा द्वुञ्चश्वष्ट पाठ्यक्रम योजना के तहत आयोजित किये जा रहे ट्रेनिंग प्रोग्राम फॉर्मल ओवरसीज प्रोफेशनल्स ऑन फॉर्मल सॉल्यूशंस टू इनफॉर्मल सेटेलमेंट्स के अन्तर्गत 19 देशों के 25 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों के प्रतिनिधिमण्डल राजस्थान आए हैं। बुधवार को प्रतिनिधिमंडल ने आवासन मंडल के मुख्यालय आवास भवन पर आकर मंडल की महत्वाकांक्षी योजनाओं का अध्ययन भी अध्ययन किया था।

आवासन आयुक्त पवन अरोड़ा ने 19 देशों से आए प्रतिनिधिमंडल का आभार जताया और उन्हें जयपुर फिर से आने का न्योता भी दिया।

~~*~~*~~

क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) जयपुर की 45वीं अर्धवार्षिक बैठक में हडको क्षेत्रीय कार्यालय में किये जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यो पर प्रस्तुतीकरण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) जयपुर द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों से अर्धवार्षिक बैठक में अपने–अपने कार्यालयों से राजभाषा संबंधी कार्यो पर प्रस्तुतीकरण हेतु अनुरोध किया गया था, जिसे हडको द्वारा स्वीकार करने पर दिनांक 28.03.2023 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) जयपुर की 45वीं अर्धवार्षिक बैठक में जिसमे श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार मुख्य अतिथि थे, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा प्रतिभागिता की गई तथा हडको क्षेत्रीय कार्यालय में किये जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यो पर प्रस्तुतीकरण दिया गया।

प्रस्तुतीकरण में निम्न बिन्दुओं को सम्मिलित करते हुये क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा की वर्तमान स्थिति, मुख्यालय से सहयोग, वार्षिक कार्यक्रम एवं निर्धारित जॉच बिंदुओं का पालन इत्यादि को विस्तारपूर्वक प्रस्तुतीकरण दिया गया:–

1. राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3) के अंतर्गत आने वाले सभी 14 कागजात इत्यादि पर प्रस्तुतिकरण के माध्यम से अवगत करवाया।

2. 'क', 'ख' व 'ग' क्षेत्रों से पत्राचार केवल हिंदी में किया जाता है।
3. द्विभाषी रूप में कार्य करने में सक्षम कम्प्यूटरों की खरीद।
4. यूनिकोड के माध्यम से हिंदी टाईपिंग वं ई–मेल केवल हिंदी में लिखी जा रही है।
5. प्रस्तुतीकरण के दौरान अनुभागों में प्रयोग किये जाने वाले द्विभाषी प्रपत्र दिखाए गये।

6. लिफाफो पर पते, प्रशिक्षण सामग्री, व्यक्तिशः आदेश, तिमाही बैठक, कार्यशाला का आयोजन, बैनर, नोटिस बोर्ड, डिस्प्ले का मुख्यतः हिंदी में प्रदर्शन किया जाता है, के बारे में विस्तृत रूप से अवगत करवाया गया।
7. प्रस्तुतीकरण के दौरान हडको वेबसाइट – द्विभाषी कार्य कर रही है, से अवगत करवाया गया।
8. हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा गृह पत्रिका 'मरू संदेश' के बारे में बताया गया।
9. क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा अवगत करवाया गया कि समस्त प्रशासनिक बैठकों में चर्चा केवल हिंदी में ही की जाती है। बैठकों का कार्यवृत भी हिंदी में जारी किया जाता है, दौरा प्रतिवेदन, यात्रा कार्यालय प्रपत्र, सभी प्रकार के आवेदन (आवास / कार / त्यौहार / कल्याण अग्रिम ऋण) इत्यादि केवल हिंदी में लिये जाते है। उक्त प्रपत्र को प्रस्तुतिकरण में दिखाया गया।
10. राजभाषा के क्षेत्र में हडको की प्रमुख उपलब्धियों के बारे में अवगत करवाया गया।
11. हडको में लागू राजभाषा उत्कर्ष योजना के बारे में अवगत करवाया गया।
12. साथ ही यह भी अवगत करवाया कि हडको द्वारा सदस्य कार्यालय हेतु कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई है तथा अन्य सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हडको से प्रतिभागिता की जाती रही है।

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) एवं सदस्य कार्यालय द्वारा हडको द्वारा दिये गए प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा की गई।

दिनांक 19.03.2023 को आयोजित खेल दिवस

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 19.03.2023 को खेल दिवस आयोजित किया गया है। सर्वप्रथम श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा उपस्थित सभी कर्मियों एवं परिवार के सदस्यों को इस अवसर पर संबोधन किया गया।

कार्यालय कार्मिकों के साथ परिवार के सदस्यों ने बड़े ही हर्षोल्लास के साथ अपनी प्रतिभागिता दी। स्पोर्टस डे पर भिन्न–भिन्न खेल गतिविधियां खेली गई जैसे की फुटबॉल, क्रिकेट, सिक्का संतुलन प्रतियोगिता (ग्रुप में), गुब्बारा दौड़ (कपल के साथ), गुब्बारा दौड़ (बच्चों में), सौ मीटर दौड़ (बच्चों में), नीबू दौड़ प्रतियोगिता (बच्चों, पुरूष तथा महिलाओं हेतु पृथक–पृथक), बैडमिंटन, डिस्क तथा हाउजी आदि आनन्दित कर देने वाला आयोजन रहा जिसमें प्रत्येक सदस्य द्वारा सक्रिय रूप से अपनी–अपनी प्रतिभागिता दी गई। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

इस दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं की फोटोग्राफ्स संलग्न हैं–

सौ मीटर दौड़ (बच्चों में)

गुब्बारा दौड़ (कपल के साथ)

गुब्बारा दौड़ (बच्चों में)

इनडोर गेम्स (TT, Ludo, Chess, Cross game, Billiards, Basket Ball etc.)

फुटबॉल

नीबू दौड़ (महिलायें)

सिक्का संतुलन प्रतियोगिता (ग्रुप में)

क्रिकेट

हाउजी

इन्डोर गेम्स्

~~*~~*~~

भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के तत्वावधान में दिनांक 12 जून, 2022 को जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन।

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हडको) द्वारा भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के तत्वावधान में दिनांक 12 जून, 2022 को क्षेत्रीय प्रमुख के नेतृत्व में वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया।

हडको, जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों की भागीदारी के साथ भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के तहत दिनांक 12 जून, 2022 को हडको क्षेत्रीय कार्यालय तथा एस–11 एवं एस–12, हडको आवासीय परिसर, ज्योति नगर, जयपुर में 20 अशोक के पेड़ों का वृक्षारोपण किया गया। आजादी का अमृत महोत्सव (AKAM) के तत्वावधान में वृक्षारोपण अभियानका सफल आयोजन किया गया।

हडको का 52वां स्थापना दिवस

हडको का 52वां स्थापना दिवस जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 07 मई 2022 (शनिवार) को ''**होटल जय महल पैलेस्**'' जयपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आमंत्रित राज्य सरकार के उच्च अधिकारी श्री सुधीर कुमार शर्मा, IAS, शासन सचिव, वित्त (बजट) विभाग, श्री सी.एम. चौहान, प्रबन्ध निदेशक, राजस्थान वाटर सप्लाई एण्ड सीवरेज कॉरपोरेशन, श्री अरूण व्यास, मुख्य अभियंता, RUIDP, श्री प्रदीप कुमार गर्ग, परियोजना निदेशक (Housing), राजस्थान अर्बन ड्रिंकिंग वाटर सीवरेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन लि., श्री भूपेंद्र माथुर, मुख्य अभियंता, स्थानीय निकाय विभाग, श्री अशोक कुमार चौधरी, निदेशक (इंजीनियरिंग–1), जयपुर विकास प्राधिकरण, श्री एम.एम. खान, वित्तीय

सलाहकार, राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लि., एवं अन्य उच्च

अधिकारी तथा हडको क्षेत्रीय कार्यालय के पूर्व अधिकारी श्री के. के. भटनागर जी, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक – हडको, श्री बलदेव सिंह सौंई एवं श्री नरेश कुमार नाकरा, पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख इत्यादि और क्षेत्रीय कार्यालय के कार्मिकों द्वारा अपने परिवार सहित आयोजन में उत्साहपूर्वक भागीदारी की गई। कार्यक्रम में हडको मुख्यालय में आयोजित 52वें स्थापना दिवस की फोटोग्राफ्स् को प्रोजक्टर के माध्यम से बढे स्क्रीन पर दिखाया गया।

कार्यक्रम के दौरान श्रीमती एवं श्री के. के. भटनागर जी, पूर्व अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक – हडको एवं श्री सुधीर कुमार शर्मा, IAS, शासन सचिव, वित्त (बजट) विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा 52वां स्थापना दिवस के अवसर पर केक काटा गया। श्री के. के. भटनागर

एवं श्री बलदेव सिंह सौंइ द्वारा इस उपलक्ष्य पर हडको के स्थापना से लेकर अभी तक हुई प्रगति / उपलब्धियों पर अपने विचार व्यक्त किये तथा स्थापना दिवस पर हडको परिवार को बधाई देते हुए आने वाले वर्षो में हडको नई – नई आयाम को छुने की कामना की।

इस दौरान **श्री सुधीर कुमार शर्मा, IAS, शासन सचिव, वित्त (बजट)** विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा हडको स्थापना दिवस पर बधाई देते हुए अवगत करवाया कि वित्त वर्ष 2021–22 में हडको एवं राज्य सरकार के मध्य तालमेल काफी अच्छा रहा है उनके उदघोषणा में कि गई टिप्पणी **''हडको एवं राज्य सरकार के कार्यालय की दूरी मात्र 5 मिनट की है''** उनके द्वारा विशेष रूप से सम्बोधन में बताया कि जबभी हडको से संबंधित कार्य पर चर्चा की आवश्यकता हुई तो शीघ्र ही क्षेत्रीय / मुख्यालय द्वारा समाधान प्राप्त हो गया। इस प्रकार का सकारात्क रवैया एवं हडको सहयोग का नतीजा रहा कि हम वित्त वर्ष 2021–22 में रू. 4760 करोड़ की योजनाएं हडको के माध्यम से वित्त पोषित करवा पाये। साथ ही इस मौके पर आमंत्रण प्रदान करने का धन्यवाद व्यक्त किया।

कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों एवं हडको कार्मिकों ने रात्रि भोजन किया और इसके उपरान्त क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा सभी अतिथियों का हडको के स्थापना दिवस पर आने के लिये धन्यवाद दिया गया।

~~*~~*~~

" जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा हिन्दी की उपलब्धिया "

राजभाषा पखवाड़ा

श्री सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख, हडको जयपुर, के सानिध्य में दिनांक 15 से 30 सितम्बर 2022 तक राजभाषा पखवाड़ा सम्पादित किया गया।

इस अवधि में 8 प्रतियोगिताएं रखी गई जिसमें तात्क्षणिक भाषण प्रतियोगिता के अन्तर्गत सभी प्रतिभागियों को दिए गए विषय पर 2 मिनट में अपने विचार प्रकट किए गए। श्रुत लेखन प्रतियोगिता में दी गई सामग्री को स्पष्ट व सुंदर हस्त लेखन के साथ समय सीमा के भीतर लिखा गया। अंग्रेजी सामग्री को हिन्दी में अनुवाद करके प्रतिभागियों ने पैराग्राफ प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। हिन्दी विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता के साथ "कर्म बड़ा या भाग्य विषय" पर लघु कहानी प्रतियोगिता में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया गया। हिन्दी विषय पर स्लोगन प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, आज के वाक्यांश प्रतियोगिता के साथ चतुर्थ श्रेणी कर्मियों के लिए सुलेख प्रतियोगिता आदि सम्पादित की गई।

राजभाषा पखवाड़ा के समापन के दिन श्री प्रवीण कुमार मस्त (उपनाम पी. के. मस्त), यातायात निरीक्षक (शिक्षण) ने राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार एवं हिन्दी भाषा की उपलब्धियों पर अपना मार्ग–दर्शन प्रदान किया तथा श्री जीति जगजीत सिंह, जो यूथ बोर्ड में लुप्त कला संस्कृति एवं प्रतिभा खोज के नोडल अधिकारी है, ने देश भक्ति गीतों से दिल को छू देने वाला समा बांधा। कार्यक्रम के अंत में क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा विजेताओं को प्रमाण–पत्र तथा पुरस्कार वितरित किए गए।

राजभाषा उत्कर्ष योजना पुरस्कार

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजभाषा **कीर्तिमान पुरस्कार व प्रमाण–पत्र** प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है जोकि जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय हडको परिवार के लिए बड़े ही गर्व का विषय है।

विविध पुरस्कार

नराकास (उत्तर) के तत्वावधान में पुरस्कृत

नराकास उपक्रम के तत्वाधान में 33 कार्यालयों के मध्य वर्ष 2022 में विविध प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित हुई। जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय की कर्मी डॉ प्रकाश जैन, वरिष्ठ प्रबंधक–प्रशासन ने भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल प्रथम द्वारा आयोजित राजभाषा हिन्दी विषय पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। श्री नरेश कुमार ठागरिया, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.) ने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, कार्यालय जयपुर द्वारा आयोजित टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री नरेश कुमार ठागरिया, उप महाप्रबन्धक (आई.टी.) एवं डॉ प्रकाश जैन, वरिष्ठ प्रबंधक–प्रशासन ने केद्रिय भंडारण निगम द्वारा नराकास के 33 कार्यालयों हेतु आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में भी संयुक्त रूप से द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कर जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय को गौरवान्वित किया।

मेघावी पुरस्कार

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मी श्री मनीष कुमार, प्रबंधक–सचिवीय की पुत्री अवनी सेन द्वारा दसवीं कक्षा में हिन्दी विषय में 89 प्रतिशत अंक प्राप्त करके हडको की राजभाषा मेधावी पुरस्कार योजना के लिए प्रतिभागी बनी है।

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मी डॉ प्रकाश जैन, वरिष्ठ प्रबंधक–प्रशासन की पुत्री अनुश्री जैन द्वारा दसवीं कक्षा में हिन्दी विषय में 89 प्रतिशत अंक प्राप्त करके हडको की राजभाषा मेधावी पुरस्कार योजना के लिए प्रतिभागी बनी है।

शैलेन्द्र सिघंवी
उप प्रबन्धक (वित्त)

" जयपुर परिवार की मस्त वाली एक्सकर्जन ट्रिप "

अगस्त का सुहावना बरसाती मौसम और एक्सकर्जन ट्रिप यादों के झरोखों के लिए अविस्मरणीय रहा है। रिमझिम रिमझिम सावन की मीठी–मीठी ठण्ड में कार्यालय के कर्मी और आश्रित सदस्य बड़े ही सुखद एहसास के साथ सभी, परिवार के एक मधुर रिश्तों के जैसे आनंदित होते हुए बस में मंगल कामना के साथ 18.08.2022 (शुक्रवार) को वोल्वो बस में माउण्ट आबू के लिए रात 10.00 बजे जयपुर से गणेश जी व अन्य मंगल गान करते हुए रवाना हुए। क्या बच्चे और क्या युवा सभी ने

जोर–शोर से बस यात्रा का पूरा वातावरण रोमाचंक बना दिया। मुश्किल से ही किसी ने एकाध घंटों की नींद की झप्पी मारी होगी मानों नींद भी कोसों दूर चली गई, ऐसा उल्लास और खुशी के माहौल में हर एक ने अपनी–अपनी उपस्थिति का हंसी–खुशी का माहौल जमा दिया।

हडको के एक्सकर्जन ट्रिप का योगदान हमारे लिए बहुत ही सौभाग्यशाली है क्योंकि हम अपने घर, अपने रिश्तेदार और अपने पड़ौसियों के साथ तो कभी भी बैठक जमा लेते हैं किंतु हम, जहाँ हमारी जीविका चलती है और 8 घंटे काम करते है, वहाँ हम केवल कर्मचारी बन कर अपने–अपने दायरे में रहते हैं और घर जाकर घर व परिवार के सदस्यों की फिक्र में लग जाते है और इसी जद्दोजहद में कई बार घर व शहर से बाहर निकलना भी मुश्किल सा लगता है किंतु ऐसे एक्सकर्जन ट्रिप कर्मियों को चिंता मुक्त कर देने का सुअवसर है जहां व्यक्ति परिवार के सदस्यों के साथ बिना किसी चिंता के घर और शहर से बाहर निकल पाता है। कार्यालय काम के 8 घंटों के बाद सुबह–शाम कुछ ही पल बच्चों, पत्नी व पति के साथ बिताने को शायद ही मिल पाते हैं लेकिन ऐसे ट्रिप में जब घर के सदस्य साथ होते है ना तब पीछे कोई चिंता नहीं छोड़ कर आते हैं और तब परिवार के साथ 24 घंटे खुशियां और आनन्द के साथ बिताना भूलने की चीज नहीं रह जाती है।

जयपुर से माउण्ट आबू के 8–10 घंटों का सफर यूं लगा जैसे मालूम ही नहीं पड़ा कब आबू रोड़ आ गया। हर व्यक्ति के दिल में संगीत बसता है मन ही मन गुनगुनाता भी है और कभी छिप–छिप कर गाता भी है। वाह क्या बात रही यहाँ मेरे पास भी शब्द नहीं है जिन्हें कभी खुल कर बोलते नहीं देखा वे भी बिंदास दिल खोल कर हंसी–ठहाकों में रम गए। बच्चे धीरे–धीरे कब अलग–अलग प्रतिभाओं के साथ बड़े जाते है पता ही नहीं चलता है। मुझे खुद अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ कि जो बच्चे अन्य दूसरे बच्चों से कभी मिले भी नहीं और कुछ तो झिझकते भी थे, उनको आपस में इतना घुलता–मिलता देखकर लगा जैसे हमसब एक ही घर से हैं वाकई हडको एक परिवार समरूप ही तो है।

आत्मीयता बहुत बड़ी चीज़ होती है जीवन में, लेकिन आज यह स्वार्थी, दिखावटी और मतलबी अधिक होती है। लेकिन माउण्ट आबू ट्रिप में परस्पर अपनापन और सहयोग की भावना देखते ही बन रही थी। बच्चों ने जो धमाल अन्त्याक्षरी में जमाया, उन्होंने मम्मी–पापा को भी पीछे छोड़ दिया। प्यारे–प्यारे गीतों और पहेलियों से रास्ते भर खुशनुमा संवाद बना रहा और अन्तर्मन से उल्लास छलकता रहा।

कोई छोटा या कोई बड़ा कर्मचारी नहीं यहां ऑफिस के वातावरण से दूर एक अपनेपन का उल्लासित कर देने वाला नया वातावरण था। खुशी की चमक सभी की आंखों में यूं ही झलक रही थी। रात दो बजे तक धमाचौकडी से बस का वातावरण गुंजायमान रहा लेकिन शरीर की प्रकृति अपना काम करती ही है शनैः शनैः आंखों में कब झप्पी के साथ नींद समाने लगी समय का आभास ही नहीं हुआ।

अब सूरज की हल्की–हल्की केसरिया सतरंगी किरणें जब चेहरे पर पड़ने लगी, धीरे–धीरे आंखें मलते हुए दिल–दिमाग में सक्रियता का अनुभव हुआ दूसरे दिन 19. 08.2022 सुबह 6 बज रहे थे। सिरोही रोड़ पर रामदेव रेस्टोरेंट में फ्रेश होकर चाय–कॉफी पीकर आलस्य और सुस्ती दूर की, इसके बाद 8–30 बजे आबू रोड़ पर रामदेव रेस्टोरेंट पर बस रोकी गई। रेस्टोरेंट में इडली, डोसा, आलू पराठां, दही, पोहा, चाय कॉफी और भी बहुत कुछ था सब ने नाश्ता किया और इसके बाद रेस्टोरेंट के निकट ही पहाड़ी की एक ऊंची टापू नुमा बड़ी काली चट्टान थी जिस पर जो नहीं चढ़ सकते थे वे भी एक दूसरे का हाथ पकड़कर जोश के साथ चढ़े और वहाँ बैठकर–खड़े होकर ठण्डी ठण्डी सिरहन वाली हवा का आनन्द लेते हुए अपनी–अपनी इच्छा से सेल्फी और ग्रुप फोटोग्राफ्स अपनी यादों के लिए सहेजे।

चारों ओर हरी–हरी पहाड़ियों के बीच दौड़ती सीधी सड़क और दोनों ओर हरे–भरे पेड़ दिल को गुदगुदा देने वाले महसूस हो रहे थे। बादल जैसे हमसे मिलने हमारी ओर आ रहे है और हम बादलों को चीरते हुए आगे बढ़ रहे है कभी बादल नीचे खाईयों में दौड़ते और उड़ते नजर आ रहे थे तो कभी ऊपर उड़ते नज़र आ रहे थे। प्रकृति के ऐसे चित्रण से रूबरू होना भीतर से बड़ा ही आनन्दित कर देने वाला था।

यात्रा के दो दिन पहले भारी बरसात के कारण पहाड़ों से बड़े–बड़े पत्थर दरक कर सड़को पर गिर पड़े थे जिसके कारण होटल से कुछ ही दूरी पहले बड़ी बसों को पुलिस की ड्यूटी टीम ने आगे जाने से रोक दिया था। मानव की प्रवृत्ति है हमेशा अच्छा होना ही उसे सुख देता है लेकिन जरा सी अड़चन और परेशानी का सामना

करने के लिए तुरंत तैयार भी नहीं होता है। सभी के चेहरों पर मायूसी छा गई कि अब होटल कैसे जाएंगे क्योंकि भारी रिमझिम–रिमझिम आ रही थी। कपड़ों के गीले होने का डर और ऊपर से भारी–भारी लगेज। एकमात्र जीप का साधन था होटल तक पहुंचने का, कोशिश तो बहुत की, बस से जाने की अनुमति मिल जाएं किंतु यातायात निर्देशों की पालना में जीप में बैठकर जाने में जो झिझक आ रही थी वह जीप में बैठने मात्र से ही उत्सुकता और आनन्द में बदल गई। जीप में बैठकर बादलों और हरियाली का नजारा निकट से देखते ही बनता था। मन प्रफुल्लित हो उठा, यात्रा की सारी थकान मानों छू हो गई।

कुछ ही मिनटो में सुबह करीब 10 बजे हम हमारे गन्तव्य स्थान होटल कामा राजपूताना पहुंचे जहां पहले ही ठहरने व भोजन की व्यवस्था जयपुर से ही की जा चुकी थी। प्रत्येक दो लोगों के लिए पृथक पृथक कक्ष आरक्षित करवाएं गए। दैनिक निवृत्ति के बाद भोजन आदि करके होटल परिसर का भ्रमण करना इतना प्रफुल्लित कर रहा था, बादल मानों हमें बार–बार छूने की कोशिश कर रहे हैं और हम उन्हें पकड़ने की। हाथ को हाथ नहीं दिखे और बादलों के बीच खुद को खड़ा पाना इस मनोरम दृश्य की कल्पना राजस्थान में करना अविश्नीय सा प्रतीत हो रहा था क्योंकि राजस्थान को तो पहले से ही सूखा प्रदेश की संज्ञा मिली हुई है लेकिन यहां सब गलत साबित सा लग रहा था। उस समय सुबह अच्छी ठंड थी।

प्रकृति की भिन्न–भिन्न सुंदर तस्वीरें अलग–अलग समय पर अलग दिखाई दे रही थी। मैं और बच्चे स्विमिंग पुल की तरफ गए। एक ओर बच्चे और बड़े कतराते हुए पानी अधिक ठण्डा होने के कारण धीरे–धीरे हाथ से पानी की ठंडक का अनुभव कर रहे थे किंतु इसके बावजूद भी हम एक–एक करते हुए धीरे–धीरे स्विमिंग पुल का आनन्द लेने लगे।

बाद में इस ओर बच्चों व बड़ों का जमघट सा लग गया। एक ओर स्विमिंग पुल में फुटबाल पासिंग गेम ने सबका दिल खुश कर दिया। बच्चों व बड़ों का जोश देखते ही बनता था सारी ठंड उड़न छू हो गई थी थकने के बावजूद किसी के चेहरे पर थकान नहीं दिख रही थी। जिनका तैरना नहीं आता था वे किनारों की रेलिंग पकड़–पकड़ कर कमर और गर्दन तक पानी में उतरे और पानी में छपाक–छपाक कर और पानी के छीटें एक दूसरे पर फैंक कर प्रफुल्लित हुए। जिनको तैरना आता

था वो बहुत तैरे और पानी में जंपिंग करते हुए और तैरते हुए अपनी फोटो खिंचवाएं। तो दूसरी ओर बच्चे गेम्स रूम में टीटी, कैरम बोर्ड और चेस आदि खेलते नजर आए। इनके अलावा हाउजी, म्यूजिकल चेयर, बेडमिंटन, कैरम और फुटबाल खेलने का भी सबने मिलकर लुत्फ उठाया।

शाम को डिनर के बाद उंचाई पर प्रकृति मय स्थित काले पत्थर के टापू पर बनी खुली मचान (झोपड़ी) के नीचे केंडल लाईट में कपल डांस किया गया। बच्चों ने भी अपनी–अपनी प्रतिभा दिखाई। एक दूसरे को देखकर अपने भीतर छिपी झिझक को दूर करते हुए दिल से खुलकर भिन्न–भिन्न शैली के नृत्य प्रस्तुत किए तो किसी ने अपनी मधुर आवाज के साथ गीतों का मोहक और यादगार समा बांधा। रात को 9–9.30 बजे मैं बच्चों के साथ डिनर करके अपने रूम पर चली गई। जो लोग रात देरी से डिनर के लिए पहुंचे उन्होनें करीब 10–10.30 बजे डाईनिंग हॉल के दरवाजे के करीब से स्वीमिंग पूल की तरफ भालू को जाते हुए देखा जो उनके लिए अविस्मरणीय दृश्य रहा।

होटल के एक–डेढ़ किलोमीटर दूरी पर नक्की झील, महादेव मंदिर, माता मंदिर और ब्रह्मकुमारी का प्रसिद्ध केन्द्र स्थित था। राजपुताना कामा होटल एण्ड रिसोर्ट के भोजन की बेहतरीन व्यवस्था और गुणवत्ता सभी को पंसद आई। हरियाली और प्रकृति की सुंदर रचना का आनन्द लेने के लिए मैनें प्रातः भ्रमण के लिए सोचा और 20.08.2022 को सुबह जल्दी उठकर दैनिक नित्य कर्म और स्नानादि से निवृत्त होकर जूते–मोजे पहन कर मोर्निंग वार्किंग के लिए ज्योंही 5.00 बजे कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर निकली तो कुछ नज़र नहीं आ रहा था। बादल मानों मुझे धक्का देकर कमरे के भीतर ही घुसने का प्रयास कर रहे थे। ठण्डी–ठण्डी अदृश्य हल्की–हल्की बौछारें मुझे बड़े प्यार से छू कर सहला रही थी। मैं भीतर से झंकृत होकर सिहर गई। यहाँ कुछ और क्या दिखाई देता नजदीक के पेड़–पौद्यें कुछ नज़र नहीं आ रहे थे। घबराकर दरवाजा बंद करके वापस कमरे में आ गई क्योंकि मुझे कल रात की भालू वाली बात याद आ गई और कांच की खिड़कियों से बाहर का नज़ारा देखने लगी वहाँ भी लगा जैसे बादलों ने शीशों पर अपना खुद का पर्दा लगा दिया है। सब कुछ शून्य सा नज़र आ रहा था। मैनें कुछ देर और इंतजार करना मुनासिब समझा।

दूसरे दिन भी वन क्षेत्र के मध्य होटल होने के कारण जंगली जानवरों की

अठखेलियां भी देखने को कई बार मिली और तो और होटल परिसर में शाम ढ़लने के बाद भालू भी दिखाई दिया, भालू हर रोज कभी सुबह या शाम के बाद उस क्षेत्र से गुजरता था और चुपचाप निकल जाता था किसी को हानि नहीं पहुंचाता था। होटल में सभी अपने कमरों की बालकनी में आकर प्रकृति के रंगों का आनन्द ले रहे थे। एक दूसरे को देखकर हाथ हिलाकर हाय–हैलों और गुड मोर्निंग कर रहे थे। सूरज की किरणें हौले–हौले धरती पर अपनी छटा बिखेर रही थी। मैं 6.30 बजे के करीब फिर बाहर निकली। बहती किरणों के साथ बादलों का जोर कम हो चला था। ज्योंही मैं रिसेप्शन पर आई, आठ–दस लोगों का साथ हो गया और ग्रुप में मोर्निंग वाक पर निकल गए।

नक्की झील होटल से मात्र 1.25 किलोमीटर के करीब ही थी। ठण्डी–ठण्डी हवा की झप्पी सिहरा रही थी। राजस्थान

जोकि सूखे के नाम से जाना जाता है इस प्रदेश में इतनी अद्भुत प्रकृति की नक्काशी देखते ही बन रही थी। घूमते हुए नक्की झील के निकट पहुँच कर लगा कि यहाँ कहाँ आ गए झील और आस–पास के वातावरण में चुप्पी थी। मुझे थोड़ा ठीक–ठाक सा ही लगा क्योंकि एक तो माउण्ट आबू पहली बार गई थी दूसरा यहाँ के ऐतिहासिक स्थल विश्व प्रसिद्ध हैं। बिल्कुल शांत झील को देखकर मैं बहुत

ज्यादा रोमांचित नहीं हुई ना ही उस समय कुछ खास लगा। यह भी मुझे आम झीलों से कमतर ही लगी इस झील के बारे में बहुत कुछ किताबों, अखबारों और न्यूज चेनलों से ही देख और सुन रखा था इसलिए मुझे नक्की झील देखने की उत्सुकता अधिक थी। मुझे लगा कि ये मीडिया और अखबार वाले शायद बढ़ा–चढ़ा कर ही जानकारी परोसते है। जैसा कि लोगों ने भी देखा है कि इसी नक्की झील पर भरी सर्दियों में बर्फ की चादर बिछ जाती है और यहाँ लोग क्रिकेट तक खेलते है। मुझे यह सब उस समय अविश्सनीय और खालीपन सा लग रहा था।

होटल से नक्की झील के रास्ते में ही अर्बुदा माता का मंदिर और ब्रह्मकुमारी का मुख्यालय स्थित था जोकि समय पर खुलता था। बाहर से ही जानकारी लेते हुए हम वापस होटल आ गए। नाश्ते का समय हो चुका था। होटल में नाश्ता व भोजन की वैरायटी का बखान करना यहाँ उचित नहीं लग रहा क्योंकि हर बार सब कुछ नया–नया होता था।

पूर्व सुनिश्चित कार्यक्रम अनुसार सभी को नाश्ता करके 9.30 बजे रिसेप्शन पर आउटिंग एवं साईट सीन के लिए एकत्रित होना था। सभी लोग जीपों में बैठकर पहुँचे और बस में अपनी–अपनी जगह बैठे और निकल पड़े साईट सीन आदि के लिए।

सबसे पहले अर्बुदा माता के मंदिर में दर्शन हेतु गए। यहाँ प्रसिद्ध स्थापत्य कला का संगम मिला। अर्बुदा देवी को कात्यायनी देवी का अवतार माना जाता है। कहा जाता है कि इस जगह पर माता पार्वती के होंठ गिरे थे जिसके कारण इसे अधर शक्ति पीठ के नाम से भी जाना जाता है। रॉक कट मंदिरों के सर्वश्रेष्ठ नमूनों में से एक यह अद्भुत मंदिर है। मंदिर में माता के दर्शन के लिए लगभग 365 सिढ़ियां चढ़कर जाना होता है। मंदिर की पौराणिक गाथा बहुत ही रोचक है। मंदिर के पास दूध के रंग के पानी का कुंआ भी स्थित है जिसे स्थानीय भक्त कामधेनु के नाम से पुकारते है। बंदरों बहुतेरी अठखेलिया मंदिर में चढ़ाई के समय और मंदिर से उतरते समय दिखाई थी।

धार्मिक स्थलों के आस–पास व रास्तें भर भिन्न–भिन्न तरह की दुकानें देखने को मिली। प्रसाद, पूजा सामग्रियां, राजस्थानी पोशाकें, सजावटी सामान, लकड़ी के खिलौने, मटकी की छाछ–राबड़ी, गुफाएं और धूप–धूणी आदि का संगम देखने को मिला।

इसके बाद हम ब्रह्मकुमारी के मुख्यालय पहुँचे। वहाँ का केन्द्र खुल चुका था। यहाँ

बैठक हॉल में हजारों लोगों को समायोजित कर लेने की क्षमता थी। वहॉं पर हमें आत्मा के बारे में बताया गया कि आत्मा केवल महान् आत्मा भगवान शिव की दिव्य ज्योति है एवं हर एक में शिव भगवान स्थित है। आश्रम के संक्षेप में परिचय के साथ शरीर व हाथों के केन्द्रों, ध्यान व राजयोग की महत्ता के साथ आत्मा के आवागमन के बारे में अध्यात्मिक पहलू को वहाँ केन्द्र में उपस्थित गुरू ने संक्षेप में सभी को चित्रण तथा मौखिक रूप से समझाई। मनुष्य की आध्यात्मिक अनुभूतियों को ध्यान योग व अन्य प्रकार से जागृत कर जीवन मूल्यों में मूलभूत परिवर्तन कर समाज के उत्थान में कैसे योगदान दिया जा सकता है संक्षिप्त में सार समझाया। नाममात्र शुल्क पर ही मैनें कुछ ज्ञानवर्धक पुस्तकें और साहित्य भी खरीदा।

साइट सीन करते–करते हम अचलगढ़ की पहाड़ियों पर स्थित अचलेश्वर महादेव जी के मंदिर के दर्शन के लिए गए। प्रवेश द्वार पर 4 टन की पंच धातु की नंदी की प्रतिमा है। वहाँ बहुत विशाल शिवलिंग स्थित है जिसके एक तरफ अंगूठे का निशान उभरा हुआ है। कहावत है कि माउण्ट आबू के पहाड़ को शिव जी के अंगूठे ने थाम रखा है जिस दिन अंगूठे का निशान गायब हो जाएगा उस दिन पहाड़ खत्म हो जाएगा। यह दुनिया का एकमात्र मंदिर है जहाँ भगवान शिव के अंगूठे की पूजा की जाती है। अंगूठे के नीचे बने प्राकृतिक खड्डे में कितना भी पानी डालो वह कभी नहीं भरता, यहाँ चढ़ाया जाने वाला जल कहाँ जाता है किसी को नहीं पता जोकि आज भी एक रहस्य बना हुआ

है। यहाँ भगवान शिव के पैरों के निशान आज भी मौजूद है। वहाँ हमने श्री कृष्ण भगवान को झूला भी झुलाया। यहाँ की पौराणिक गाथा बहुत ही रोमांचित कर देने वाली है। स्थान की कमी से यहाँ पूर्ण उल्लेख नहीं कर पा रही हूँ।

समय–सीमा में ही हमारा अधिकतम दर्शनीय स्थलों का दर्शन करने का प्रयास था। अब हमने बेजोड़ कला का संगम देलवाड़ा जैन मंदिर की तरफ रूख किया। 900 साल पुराना देलवाड़ा का जैन मंदिर विश्व के 7 अजूबों से कम नहीं है। शिल्प सौन्दर्य का बेजोड़ खजाना छिपा है यहाँ, 11वीं शताब्दी से 16वीं शताब्दी के मध्य बना यह 5 मंदिरों का समूह है जो जैन धर्म के 24 तीर्थंकरों को समर्पित है। विमल वासाहि मंदिर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान जी को समर्पित है। लूना वसाही मंदिर 22वे तीर्थंकर भगवान नेमीनाथ जी को समर्पित है। इस मंदिर के हॉल में 360 छोटी–छोटी मूर्तियां शोभायमान है। यहाँ एक हाथ कक्ष भी है जिसमें संगमरमर से बने 10 हाथी अनायास ही मन मोह लेते है। मंदिर में स्थित मूर्ति की ऑखें असली हीरों की बनी हैं और गले में बेशकीमती बहूमूल्य रत्नों का हार शोभायमान है। तीसरा मंदिर 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी तथा चौथा मंदिर पित्तलहार मंदिर भी प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान को समर्पित है। पांचवा मंदिर जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर को समर्पित है। सभी मंदिर नायाब नक्काशी से भरे हैं जिन्हें देखकर लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। अविश्सनीय प्रतीत होने वाली संगमरमर पर कला व संस्कृति के अंकन के लिए कहा जाता है कि मंदिर बनाने वाले जो कारीगर संगमरमर को तराशने का काम पूरा करते थे, उन्हें इकट्ठा किए गए संगमरमर की धूल के अनुसार सोना का भुगतान किया जाता था जिससे कारीगर पूरी तरह मन लगा कर काम करते थे और शानदार नक्काशी बनाते थे।

बाहर से देखने पर तो देलवाड़ा मंदिर साधारण मंदिर लगता है कि किंतु असाधारण और उत्कृष्ट वास्तुकला इस मंदिर के भीतर ही छिपी है। नक्काशीदार

छतें, स्तम्भ, दरवाजों और दीवारों पर बारीक कारीगरी, संगमरमर पर असाधारण और अद्भुत कारीगरी की मिसाल मिलती है यहाँ जो विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलेगी क्योंकि पूरे मंदिर में कारीगरी दुबारा दोहराई नहीं गई है। संगमरमर पर उकेरी गई देवी–देवताओं की प्रतिमाएं अकल्पनीय सी लगती है।

यहाँ देवरानी–जेठानी का मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि दोनों में सबसे सुंदर मंदिर बनवाने की प्रतिस्पर्धा हो गई थी। दोनों एक दूसरे से और अच्छा तथा श्रेष्ठ मंदिर बनवाने के फेर में एक दूसरे का मंदिर देख कर बार–बार

अपना मंदिर तुड़वा देती है। दोनों मंदिरों को पूरा होने में कई वर्ष लग गए। अंत में दोनों ने बराबर राशि लगाकर मामला निपटाकर मंदिरों को पूर्ण करवाया। संगमरमर नक्काशी विश्व स्तर पर इन्जीनियरिंग एवं वास्तु का नायाब नमूना है। इतना छिपाने के बाद भी विदेशी हमलावर अलाउद्दीन खिलजी ने मंदिर के बाहर की तरफ बहुत तोड़–फोड़ कर कला और संस्कृति को क्षति पहुँचायी थी जिसके निशान आज भी मुंह से बोल रहे हैं। आक्रमण के समय मंदिर के गुंबदों को मस्जिद की शैली में तैयार कर दिया गया था जिसके कारण मुगल शासकों के आक्रमण से इस मंदिर के भीतर छिपी कला व संस्कृति की अनमोल विरासत खण्डित होने से बची रह गई। यहाँ फोटोग्राफी तथा भीतर मोबाईल ले जाना अलाउड नहीं था। मंदिरों के भीतर की कलाकृतियों और सुंदरता की दिल में छाप बनाकर हम सब आश्चर्य चकित आंखों के साथ बाहर निकल आएं।

दोपहर भोजन का समय हो चला था। पेट में भोजन के लिए उथल–पुथल हो चली थी। देलवाड़ा जैन भोजनालय में हम सभी ने सादा और सात्विक राजस्थानी भोजन किया और फिर हम गुरूशिखर की ओर निकल पड़े।

राजस्थान का कश्मीर, माउण्ट आबू, जहाँ बादल जमीन पर उतर आते हैं। कर्नल टॉड ने गुरूशिखर को संतों का शिखर का नाम दिया है। अर्बुदा पहाड़ियों की चोटी में स्थित गुरूशिखर अरावली पर्वतमाला श्रृंखला के उच्चतम बिन्दु पर 5676 फीट पर स्थित है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महेश के अवतार दत्रातेय जी की त्रिमूर्ति का

मंदिर है। यह स्थान स्वामी रामनाथ और दत्तात्रेय जी के चरणों का स्थान माना जाता है। नीचे से मंदिर को और इसकी ऊँचाई देखी तो बिना चढ़े ही श्वास भरने लगी लेकिन जब मैं छोटी थी तब स्कूल के पाठ्यक्रम में गुरू शिखर के बारे में बहुत सुना था। यहाँ तक आए भी है और गुरू शिखर नहीं देखा तो क्या देखा कहीं इसे नहीं देखने का मलाल दिल में नहीं रह जाए बस इसी हिम्मत से दो–दो कदम आगे बढ़ा दिए फिर सीढ़ियों का पता ही नहीं चला सैंकड़ों सीढ़ियॉ चढ़ गए धीरे–धीरे। दत्तात्रेय के मंदिर के छोटे से गुफा नुमा द्वार तक पहुँचे, भीड़ में धक्का–मुक्की की मशक्कत के बाद दर्शन कर बाहर आ गए। इस पहाड़ी से नीचे का दृश्य कल्पना से बहुत दूर और अति सुंदर लग रहा था। बादल नीचे और हम ऊपर यहाँ अद्भुत बहुत ही अद्भुत शांति ही शांति प्रतीत हुई। फिर हिम्मत जुटा कर हम इसके ऊपर गुरू शिखर की पहाड़ी पर चढ़ पड़े और इस यात्रा को यादगार बना डाला।

हल्की–हल्की सुनहरी ठण्ड के साथ शाम ढलने लगी और फिर हम नक्की झील आ पहुँचें। यह क्या! यहाँ का नज़ारा बदल चुका था जो सुबह था शाम को बिल्कुल नहीं था। सुबह सन्नाट सूनी–सूनी सी लगने वाली इस जगह पर अभी पांव रखने की जगह तक नहीं थी। वीकेण्ड होने और लगातार तीन छुट्टियां होने के कारण भीड़ इस कदर दिख रही थी मानों समूचा माउण्ट आबू यहीं झील के आस–पास सिमट गया हो। भांति–भांति की दुकानें, आईस्क्रीम, फास्ट फूड, राजस्थानी भोजन, प्रदेश के भिन्न–भिन्न शहरों के वस्त्र, कलाकृतियां मुंह से बोल रही थी। नक्की झील की तो पूछो ही मत नज़ारा सुबह के मुकाबले बिल्कुल पलट चुका था। चारों ओर रंग–बिरंगी लाईटों की बरसती रोशनी ने झील का चेहरा ही बदल दिया। तरह–तरह की नावों में बैठकर सैलानी झील में आनन्द उठा रहे थे और झील के मध्य में बहते फाउंटेन के करीब अठखेलियां कर रहे थे। इतना मनोरम दृश्य था जिसके लिए मेरे पास शब्द भी कम पड़ रहे है। यह मेरी कल्पना से अधिक सुंदर दृश्य था। नक्की झील के बारे में मेरे विचार सुबह के मुकाबले अब बिल्कुल बदल गए। बच्चों का चहकना, उनकी आंखों से खुशी व आनन्द यूं ही टपक रहे थे जब बोटिंग का आनन्द ले रहे थे। किसी ने पेडस्टल बोट तो किसी ने गाइड के साथ बोटिंग का आनन्द लिया। ठण्डी–ठण्डी पुरवईयां ने भीतर तक रोमांच से भर दिया।

7–30 बजे वापस होटल लौट आए। यहाँ पर चाय, कॉफी व पकौड़ों के साथ स्विमिंग पुल परिसर में ही डीजे का इंतजाम किया गया था। सभी अपने–अपने पसंदीदा गानों की ताल पर झूम–झूम कर पुराने और नए गानों पर थिरके और नाचे। बड़ा ही आनन्द आ रहा था जब सब मिल कर एक साथ घुलमिल कर डांस कर रहे थे।

अब डिनर का समय हो चुका था। अधिक थकान महसूस हो रही थी। रात्रि भोजन के बाद सभी अपने–अपने कमरों में चले गए। बच्चा पार्टी को नींद कहां आने वाली थी। सभी एक कमरे में इकट्ठे हुए और देर रात तक अन्त्याक्षरी और भांति–भांति

के गेम खेलते रहे। सब कुछ ऐसा लग रहा था जैसे कि एक ही परिवार के लोग किसी बड़े समारोह में आए है। आत्मीयता और अपनापन की मिसाल दे रहा था यह एक्सकर्जन ट्रिप कार्यक्रम।

21 तारीख की सुबह जयपुर के लिए प्रस्थान करना था। सभी सदस्यों ने समय पर नाश्ता आदि करके होटल के बाहर और भीतर तस्वीरों में खुद को सहेजा और मीठी यादें इकट्ठी कर ली। हम सभी जीपों में बैठकर नीचे जहाँ बस खड़ी थी वहाँ पहुँचे। सभी के चेहरों पर बहती खुशी और आंखों की चमक बयान नहीं कर सकती। माउण्ट आबू से जयपुर यात्रा में बस में बच्चों व बड़ों, दूसरे शब्दों में हर एक सदस्य ने इस ट्रिप अपने विचार रखें। एक बार फिर पूरा माहौल गानों व भजनों में रम गया। अन्त्याक्षरी का दौर फिर चल पड़ा। माईक की मदद से धुन व स्वर का राग बिखरा जो पुलकित कर देने वाला था।

कोई घर से स्नेक्स लाया था, कोई फल लाया था तो कोई सौंफ, सुपारी, चूर्ण की गोली व टॉफियां लाया था। सबने मिल बांट कर खूब धूम–धड़ाका किया और इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। रास्ते में लंच के लिए रूके और फिर जयपुर के लिए रवाना हो गए। रात्रि 9.30 बजे हम कार्यालय परिसर के बाहर पहुँच चुके थे। सभी ने अपने–अपने वाहनों से अपने–अपने घरों की ओर रूख कर लिया। चेहरे पर बिछड़ने की मायूसी साफ झलक रही थी। दो–तीन दिन में ही बच्चों व बड़ों में आत्मीयता व प्रेम इतना प्रगाढ़ हो चला था कि आंखें भी रूआंसी हो रही थीं लेकिन सब बहुत खुश थे। शहर से बाहर घूम कर आने का चाव ही बड़ा रहता है। फिर मिलेंगे! यह बोलकर दिल को दिलासा देते हुए बड़ों व बच्चों ने जाते हुए सभी का अभिवादन कर विदा ली।

सबसे बड़ी बात यह कि इस कार्यक्रम के निष्पादन और सफलता में श्री सुधीर कुमार भटनागर जी, क्षेत्रीय प्रमुख का बड़ा ही कर्मठ योगदान रहा है अन्यथा यह कार्यक्रम माउण्ट आबू के लिए बन ही नहीं पाता। उनके सकारात्मक दृष्टिकोण और विश्वास से यह कार्यक्रम रोचक और यादगार बन पाया।

माउण्ट आबू ही हमने इसलिए चुना क्योंकि यह राजस्थान में कश्मीर से कम नहीं है। पर्वतीय क्षेत्र होने के साथ ही भरपूर हरियाली, वन क्षेत्र, पहाड़, झील, वन्य जीव उद्यान के साथ बहुमूल्य मंदिरों की वास्तुकला व पत्थरों की नक्काशी की भी यहाँ वैश्विक स्तर पर अहमियत है।

प्रकाश जैन
वरि. प्रबन्धक (प्र.)

हडको जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय समाचारों में

हुडको का पौधरोपण अभियान आयोजित

जयपुर | हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हुडको) की ओर से भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में रविवार को पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुधीर कुमार भटनागर रहे। हुडको क्षेत्रीय कार्यालय तथा एस-11 एवं एस-12, हडको आवासीय परिसर, ज्योति नगर में पौधरोपण किया गया।

हडको-एमओएचयूए में हुआ समझौता

जयपुर | हडको ने आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय के साथ वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए मुख्य लक्ष्य स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। मनोज जोशी, सचिव एमओएचयूए तथा कामरान रिजवी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हडको ने सुरेन्द्र कुमार बागड़े, अपर सचिव एमओएचयूए, एम नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग) तथा डी. गुहन निदेशक (वित्त) हडको की उपस्थिति में इस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

के प्रयासों को आवश्यक बताया।

हडको ने मनाया 52वां स्थापना दिवस

नवज्योति, जयपुर। हाउसिंग एवं अर्बन डवलपेंट कॉरपोरेशन (हडको) ने पिछले दिनों अपना 52वां स्थापना दिवस मनाया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य तथा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप पुरी ने स्थापना दिवस पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हडको राष्ट्र को समर्पित अपनी सेवा के लिए भारत में सतत आवास और शहरी विकास के कार्यों का चैम्पियन रहा है। कोविड की दो लहरों के बावजूद हडको ने ईडब्ल्यूएस और एलआईजी क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आवास और आधारभूत सुविधाओं का विकास किया है। हडको ने वर्ष 2021-22 में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 20,663 करोड़ रुपए के ऋण की स्वीकृति दी है, जो पिछले साल की 9202 करोड़ रुपए की कुल ऋण स्वीकृतियों से लगभग 2.25 गुना अधिक है।

जरूरतमंद लोगों को कराया भोजन

बस्सी। क्षेत्र के सभी सरकारी अस्पतालों में डॉ. अजय मीणा द्वारा संचालित वसुंधरा जनता रसोई के जरिये जरूरतमंद लोगों को भोजन कराया गया। इस अवसर पर डॉ. मीणा ने बताया कि प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के पूर्व में मनाए गए जन्म दिवस पर वसुंधरा जनता रसोई का शुभारंभ किया गया था। रसोई से ऐसे लोगों का पेट भरा जा रहा है जो रोजाना ... कर खाते हैं। यह रसोई प्रदेश के सभी जिलों,

हडको ने 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत विकसित भारत' विषय पर सत[र्कता] जाकरूकता सप्ताह मनाया

जयपुर | हडको ने इस वर्ष 'भ्रष्टाचार मु[क्त] विकसित भारत' विषय पर जागरूकत[ा] मनाया। हडको के अधिकारियों को सत्य[निष्ठा] शपथ दिलाई गई। जागरूकता सप्ताह ... भ्रष्टाचार मुक्त समाज का निर्माण करने ... जीवन में भ्रष्टाचार के खिलाफ जागरू[कता] करने के लिए भारतवर्ष में फैले हडको क[ार्यालयों में] 'निवारक सतर्कता' पर एक ई निबंध अ[ौर] लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया ... व्याख्यान दिया गया। सभी कार्मिकों ... एकता दिवस पर एकता की शपथ भी दि[लाई]... एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट ... डी. गुहान, निदेशक (वित्त) और ... अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा ... को सम्मानित किया। जयपुर क्षेत्रीय ... सुधीर कुमार भटनागर, क्षेत्रीय प्रमुख द्व[ारा] जागरूकता की ऑन-लाईन शपथ दि[लाई]...

4 लाख यात्रियों का सफर होगा आसान

रोडवेज को 560 बसों की खरीद के लिए दी हरी झंडी

जयपुर | लंबे इंतजार के बाद रोडवेज को बसें खरीदने के लिए सरकार से हरी झंडी मिल गई है। 162 करोड़ की लागत से अब रोडवेज यूरो-6 की 560 बसों की खरीद कर सकेगा। इन बसों की खरीद के लिए रोडवेज प्रशासन ने तीन महीने पहले सरकार को बैंक गारंटी देने के लिए प्रस्ताव भेजा था, जिसे सरकार ने 27 दिसंबर को बैंक गारंटी देने का आदेश जारी कर दिया है। आदेश वित्त विभाग के बजट डिविजन के डिप्टी डायरेक्टर श्रीकृष्ण शर्मा ने जारी किया है। बसें रोडवेज की ओर से हुड़को से लॉन लेकर खरीदी जाएगी। नई बसें आने से राजस्थान के करीब 4 लाख यात्रियों को फायदा होगा। वहीं बसें अब मार्च के बाद दिल्ली में भी एंट्री कर सकेंगी। रोडवेज के बेड़े में तीन साल बाद 560 बसें शामिल होगी।

300 एक्सप्रेस, 150 सेमी डीलक्स बसों की खरीद

नई बसों की खरीद में 300 एक्सप्रेस, 150 सेमी डीलक्स, 100 स्लीपर और 10 वॉल्वो शामिल होगी। वित्त विभाग की स्वीकृति के बाद अब रोडवेज की ओर से बसों की खरीद के लिए टेंडर किया जाएगा। रोडवेज बेड़े में ठेके सहित 3800 बसें हैं। इसमें से 840 ठेके पर ले रखी हैं। जनवरी में 1 हजार बसें कबाड़ हो जाएंगी तो 2 हजार ही रह जाएंगी।

सरकार से लेनी पड़ी बैंक गारंटी : रोडवेज वर्तमान में 4600 हजार करोड़ के घाटे में चल रही हैं। बढ़ते घाटे की वजह से बैंकों ने रोडवेज को लॉन देने से मना कर दिया। अब सरकार ने लॉन की गारंटी दी है।

हडको के राजस्थान में क्षेत्रीय कार्यालय को पुरस्कार

जयपुर | हाउसिंग एवं अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन (हडको) के 52वें स्थापना दिवस के मौके पर दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय आवासन एवं शहरी कार्य तथा पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की। कार्यक्रम में आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय में राज्यमंत्री कौशल किशोर, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राजस्थान के अध्यक्ष सुधांश पंत, वित्त विभाग में निदेशक (बजट) बृजेश किशोर शर्मा उपस्थित रहे। समारोह में 4760 करोड़ के ऋण स्वीकृत और 4155 करोड़ रुपए के ऋण वितरित कर बेहतर प्रदर्शन करने पर हडको के राजस्थान में क्षेत्रीय कार्यालय के प्रमुख सुधीर कुमार भटनागर को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हडको जयपुर को पीएमएवाई-सीएलएसएस श्रेणी में उत्कृष्ट पुरस्कार भी मिला है। उदयपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड ने भी विरासत श्रेणी के तहत 'हडको डिजाइन अवार्ड' जीता है। इस मौके पर अधिकारियों को भी सम्मानित किया गया।

HUDCO

...CO observed Vigilance Awareness Week on this year's th... ...ruption Free India for a Developed Nation". The Integrity pl... ...dministered to HUDCO officials and during the week, an e... ...logan writing competition and lecture on 'Preventive Vigila... ...organized in HUDCO offices pan-India, to create aware... ...st corrupt practices and to promote probity in public lif... ...eve a corruption—free society. The officials were ... ...nistered the Unity Pledge to mark National Unity Day. Furth... ...ance Awareness programme was organized at the South D... ...icipal Corporation Boys School, Nizamuddin Basti, Sarai ... ..., New Delhi. The students participated enthusiastically in ... ...and shared their thoughts on the theme by way of speech/po... ...s. Shri M. Nagaraj, Director (Corporate Planning), Shri D. Gu... ...ctor (Finance) and other senior HUDCO officials felicitated ...cipating students. In continuation, Vigilance Awareness W... ..., was started by administering online Pledge by Shri Su... ...ar Bhatnagar, Regional Chief, in HUDCO Regional office, Ja... ...show and Drawing competition among students of College ...ral School were organized and prizes to the winners ... ...buted and vigilance awareness campaign was done during ...

हुडको का पौधरोपण अभियान आयोजित

जयपुर | हाउसिंग एंड अर्बन डवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (हुडको) की ओर से भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में रविवार को पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सुधीर कुमार भटनागर रहे। हुडको क्षेत्रीय कार्यालय तथा एस-11 एवं एस-12, हडको आवासीय परिसर, ज्योति नगर में पौधरोपण किया गया।

हडको

जयपुर क्षेत्रीय कार्यालय

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी

(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको भवन, विद्युत मार्ग, ज्योति नगर, जयपुर – 302005

दूरभाषः 0141–.2740863

टैलीफैक्सः 0141–2740702, ई–मेल jro@hudco.org

पंजीकृत कार्यालय

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

आईएसओ 9001:2015 प्रमाणित कम्पनी

(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको भवन, भारत पर्यावास केन्द्र, लोधी रोड, नई दिल्ली – 110 003

दूरभाषः 24649610–23, 24627113–15, वेबसाईट www.hudco.org

फैक्सः 24625308